श्रीहरि
VRPF

वनांचल की पाती

वर्ष 18 | अप्रैल से जून, 2024 | विक्रमी संवत् 2081

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

(वन बंधुओं एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित)

व्यक्ति का अहंकार

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

'मैंने सभी शास्त्रों का अध्ययन कर लिया। पूजा–पाठ भी बहुत करता हूँ। लगातार कई दिनों तक बिना अन्न–जल के व्रत रहता हूं। जरूरतमंदों को दान करता हूं। किसी से खुद कुछ मांगता नहीं था, स्वेच्छा से जो कुछ दे देता था, उसे प्रसाद मान कर रख लेता हूँ। 'प्रायः ऐसी बातें सामर्थ्यवान लोगों के मुंह से सुनने को मिलती हैं। वे आत्मप्रशंसा के पुल बांधते हैं, तथा उत्तर में सामने वाले से केवल स्वीकृति चाहते हैं। नकारात्मक प्रतिक्रिया आने पर वे भीतर ही भीतर तिलमिला जाते हैं, लेकिन सफाई में प्रायः यही बातें कहते हैं कि भगवान ही सब कुछ है, उसी की कृपा से ही सम्मान और सुखमय जीवन मिला है। यदि मनोविज्ञान की दृष्टि से आत्मप्रशंसा करने वालों की विवेचना की जाए तो यह प्रवृत्ति मन की हीनता को ही दर्शाती है।

आत्मप्रशंसा इसलिए की जाती है ताकि वाहवाही मिलती रहे जिससे आंतरिक सुख मिले, क्योंकि ऐसे व्यक्ति का अंतर्मन सम्मान पाने को लालायित रहता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि जब खुद अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने की आदत पड़ जाती है और इसके बल पर सम्मान मिलने लगता है तो इससे अहंकार बढ़ने का खतरा होता है। अहंकार का परिणाम अंततः घातक होता है, क्योंकि अहंकारी व्यक्ति हर जगह खुद को ज्येष्ठ, श्रेष्ठ और सर्वश्रेष्ठ मानने लगता है। ऐसी स्थिति में वह लोगों से, परिवार के सदस्यों के साथ भी घुलमिल नहीं पाता। उनसे दूर होते चला जाता है, जो बाद में कष्ट का कारण बनता है।

निष्कर्ष यही है कि जीवन में अहंकार पैदा करने वाली स्थितियों से सदैव दूरी बनानी चाहिए। आत्ममुग्धता इस श्रेष्ठ जीवन को पथभ्रष्ट करने का काम करती है।

भारत माता की जय

श्रीहरि VRPF

राष्ट्रीय संस्करण
वनांचल की पाती

वर्ष । 18 अप्रैल से जून, 2024 । विक्रमी संवत् 2080

मार्गदर्शक मण्डल

श्री वीरेन्द्र कुमार, संगठन प्रभारी
श्री मनोज अरोडा, केंद्रीय अध्यक्ष
श्री रविदेव गुप्ता, अध्यक्ष EVFI
श्री वेद बंसल, केंद्रीय उपाध्यक्ष

सम्पादकीय मण्डल

डा. रुकमणी गुप्ता
दिग्विजय गुप्ता
माधव शर्मा

प्रकाशक

वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन

Vanvasi Raksha Parivar Foundation
B-4, Housing Society, South Extension Part 1,
New Delhi -110049, India
Ph: +91-11-47980066, +91-11-47011669
Mobile: +91-9667260911
E-mail: vrpfdelhi8@gmail.com
Web : www.vrpf.org.in

कापीराइट @ वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन, सभी अधिकार सुरक्षित

पत्रिका में प्रकाशित लेख और विचारों का अभिप्राय समिति के उद्देश्यों और योजनाओं के प्रति चेतना और जागरुकता पैदा करना है। लेखकों के व्यक्तिगत विचार और चिंतन समिति के चिंतन दर्शन से भिन्न हो सकते हैं। लेख मे दिये गये तथ्यों और आंकड़ों की सटीकता, वैधता और पूर्णता का उत्तरदायित्व लेखकों का रहेगा।

सम्पादक की अनुमति के बिना पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचना आदि के किसी भी अंश का अन्य प्रत्रिकाओं में प्रकाशन अवैधानिक होगा।

मुद्रक एवं प्रकाशक :–
श्री मनोज अरोड़ा, (अध्यक्ष),
वनवासी रक्षा परिवार फाउन्डेशन द्वारा प्रकाशित
मुद्रकः प्रिन्टेक इन्टरनेशनल,
A-6/D, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली–95 से मुद्रित।
ई–मेल: printechinternational@gmail.com

सम्पादकीय

इस वर्ष अयोध्या में केन्द्रीय चिंतन वर्ग, सेवाव्रती वर्ग की सम्पन्नता के साथ सभी कार्यकर्ता, जो अभी तक अयोध्या नहीं जा पाये हैं, वे श्रीरामलला के दर्शन से लाभन्वित होंगे, जो उनके जीवन में नया आयाम होगा, स्मरणीय दिन होगा। यह अंक तो मानो राममय ही रहेगा जब इस अंक में आप 'हनुमच्चरितम्' पुस्तक के क्रमशः लेख के साथ 'रामायणकालीन राजनैतिक व्यवस्थाएं' लेख में श्रीराम के जीवन के विभिन्न रुपों, विशेषतः उनके राजनीतिक कूटनीतिक स्वरुप की छवि देखेंगे। श्रीराम ने कोई चमत्कार न करके लौकिक मानव रुप में ही शौर्यपूर्ण, राजनीतिक, कूटनीतिक स्वरुप का परिचय दिया, तथा राज्य सिंहासन पर आरूढ़ होने पर सम्पूर्ण आर्यावर्त की एकता, आवण्डता व सुरक्षा हेतु अद्भुत कार्य किये जिसके कारण वे 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहलाये। यह मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरुप उन्होंने मानव रुप में ही स्थापित किया जो हमें भी शौर्यवान् बलवान, बुद्धिमान बनकर राष्ट्र के प्रति उत्तम कार्य करने की प्रेरणा व उत्साह देता है।

इस तिमाही में ही 5 जून को 'पर्यावरण दिवस' वैश्विक स्तर पर मनाया गया। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी वायु प्रदुषण–जल प्रदूषण–ध्वनि प्रदूषण व प्लास्टिक प्रयोग की हानि पर चिन्ता जताई गयी तथा इनके मुक्ति के उपाय ढूंढे गये। एवमेव स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता हेतु 21 जून को योग दिवस मनाया गया जिसको अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने का श्रेय भारत की ऋषि–मुनि परम्परा का ही है।

विभिन्न प्रांतों में संगठन द्वारा संचालित 287 प्रतिभा विकास केन्द्रों में रामनवमी के अवसर पर बच्चों को श्रीराम के जीवन की जानकारी देने के साथ 'सेवा–समर्पण सप्ताह' मनाया गया जिसमें छात्रों ने सामर्थ्यानुसार कुछ राशि भी समर्पित की। 21 जून योग दिवस भी 557 केन्द्रों पर मनाया गया। इन दोनो ही कार्यक्रमों में बच्चों के साथ उनके अभिभावकों, समिति सदस्यों की सहभागिता तथा समाज के विशिष्ट जनों के मार्गदर्शन से दोनो कार्यक्रम भव्यतापूर्ण सम्पन्न हुए।

मुझे विश्वास है कि संगठन की गांव–शहर में वचित समाज के कल्याण हेतु चलने वाली सभी सभी योजनाएं 'एक भारत–श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को मूर्त रुप प्रदान कर रही हैं क्योंकि संगठन देश की अंतिम सीमा तक समरस भारत, शिक्षित, संस्कारित, स्वस्थ, स्वावलम्बी तथा उन्नत भारत के स्वप्न को पूरा कर 'श्रेष्ठ भारत' के निर्माण में अपनी महती भूमिका निभा रहा है। इन लक्ष्यों को पूरा करने में नित नये कार्यकर्ता तथा सहयोगी बंधुओं को संगठन से जोड़कर हमें अपने कर्त्तव्यों का पालन करना है।

इसी आशा एव अपेक्षा से....................

डा0 रुकमणी गुप्ता
संगठन मंत्री, केन्द्रीय महिला समिति

शब्दाभिनंदन

मैं अभी तक राममय हूँ, रामस्मरण में मस्त हूँ! जैसे 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीरामलला का दर्शन किया था, वापिस आकर भी उसी छवि का दर्शन! रामनवमी पर एक बार प्रधानमंत्री द्वारा आह्वान से यह भावना फिर से जाग्रत हो गयी है कि कुशंल, शुद्ध प्रशासन से अब भविष्य में **रामराज्य** की कल्पना अवश्य साकार होगी।

श्रीराम ने वनवासी समाज के सहयोग से दुष्टों, राक्षसों का संहार कर स्वयं नगरवासी होकर दोनों के बीच सेतु बनकर एक समरस समाज की स्थापना की। इसी उद्देश्य को लेकर वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन संकल्पपूर्वक जुटा है नगर के दलित–वंचित नगरीय एवं वनवासी समाज तथा नगरीय समृद्ध समाज के मध्य समरसता स्थापित करने में। इसके लिये वह शिक्षित संस्कारित, स्वावलम्बी बनाने हेतु अनेक गतिविधियों का संचालन कर रहा है। इस हेतु नगरों में प्रतिभा विकास केन्द्र द्वारा वंचित समाज के बच्चों को शिक्षित करने के साथ उनके परिवारों को भी जागरुक नागरिक बनाने का पुनीत कार्य हो रहा है। गांवों में भी केन्द्रों तथा इन ग्रामों में विद्यालय, कम्प्यूटर केन्द्र के संचालन द्वारा यही कार्य अब गति पकड़ रहा है।

इस वर्ष दक्षिणी, उत्तरी व पूर्वी संभाग वर्ग क्रमश: 28 अप्रैल 05 मई तथा 12 मई को सम्पन्न हुए जिनमें दिल्ली के सभी विभागों के नगर स्तर तक तथा महिला समिति एवं युवा समिति के कार्यकर्ता सम्मिलित हुए, इन कार्यकर्ताओं ने संगठन प्रभारी मा0 वीरेन्द्र जी के अतिरिक्त संघ तथा विश्व हिन्दू परिषद् के वरिष्ठ जनों के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में वंचित वनवासी–नगरवासी समाज को उन्नत करने तथा प्रतिभा विकास केन्द्रों के विस्तार हेतु लक्ष्य निर्धारित कर संकल्प लिये। इसके परिणामस्वरुप ही संगठन अपने लक्ष्यों की प्राप्ति कर यशस्वी बन सकेगा।

इसी प्रकार वनवासी क्षेत्रों के सेवाव्रती कार्यकर्ताओं के भी अर्द्धवार्षिक वर्ग आयोजित किये जिनमें उनके पिछले कार्यों की समीक्षा के साथ अगले 6 माह के लक्ष्यों के कार्यान्वयन की दिशा दी जो सफलता की सीढ़ी चढ़ता दृष्टिमोचर हो रहा है। इस बार का वर्ग केन्द्रीय चिंतन वर्ग के समापन के साथ ही अयोध्या में सम्पन्न होगा।

मैं बहुत हर्षातिरेक में हूँ कि इस वर्ष का त्रिदिवसीय केन्द्रीय चिंतन वर्ग 07–09 सितम्बर को अयोध्या में ही सम्पन्न होने जा रहा है जिसके लिये हमारे कार्यकर्ता मानों स्वप्न सा देख रहे थे। मैं आश्वस्त हूँ ये कार्यकर्ता अयोध्या से नई ऊर्जा से आप्लावित होकर आयेंगे तथा संगठन के कार्य को तीव्रगति से आगे बढ़ायेंगे।

इस वर्ष उड़ीसा के वनवासी क्षेत्रों की वनयात्रा में कुछ नये तथा पुराने सक्रिय कार्यकर्ताओं ने पूरे उत्साह से भाग लिया तथा संगठन के कार्यों का अवलोकन किया। मुझे विश्वास है कि ये बंधु वनवासी समाज से प्रत्यक्ष मिलकर एक बार फिर से नये उत्साह से उनके प्रति संकल्पित भाव से कार्य में सन्नद्ध होंगे।

मा0 वीरेन्द्र जी लगातार प्रवास द्वारा विभिन्न प्रान्तीय कार्य क्षेत्रों का अवलोकन करते रहते हैं कि वर्तमान कार्य कैसा चल रहा है तथा भविष्य में और कौन सी नई योजना प्रारंभ कर कार्य को गति दी जा सकती है। इससे इन वनक्षेत्रों में संगठन के कार्यो में लगे सेवाव्रती कार्यकर्ताओं में भी उत्साह का संचार हो रहा है।

अंत में, मेरा निवेदन है कि इस रामकाज में लगे सभी नगरीय तथा ग्रामीण सेवाव्रती बंधु अपने दायित्वों, कर्त्तव्यों को सर्वशक्ति तथा सामर्थ्य से पूरा करते हुए अपने राष्ट्र के प्रति स्वयं के जीवन को सार्थक तथा सफल बनायें तभी भारत विश्व का सिरमौर बन सकेगा।

जय सनातन जय भारत!

आपका शुभेच्छु

मनोज अरोड़ा
केन्द्रीय अध्यक्ष
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

बालिका की जीवन गाथा सब के लिये प्रेरक है।

वीरेन्द्र कुमार शर्मा
संगठन प्रभारी,
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

सरस्वती विद्या निकेतन गंधवाल करावाड़ में 11 से 12 मार्च को डूगरपुर जिला में संचालित प्रतिभा विकास केन्द्र का आचार्य प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न हुआ, वहाँ वीर भील बालिका कालीबाई का बलिदान ज्ञात हुआ।

15 अगस्त 1947 से पूर्व भारत में अंग्रेजों का शासन था। उनकी शह पर अनेक राजे–रजवाड़े भी अपने क्षेत्र की जनता का दमन करते रहते थे। फिर भी स्वाधीनता की ललक सब ओर विद्यमान थी, जो समय–समय पर प्रकट भी होती रहती थी।

राजस्थान की एक रियासत डूंगरपुर के महारावल चाहते थे कि उनके राज्य में शिक्षा का प्रसार न हो। क्योंकि शिक्षित होकर व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो जाता था, लेकिन अनेक शिक्षक अपनी जान पर खेलकर विद्यालय चलाते थे। ऐसे ही एक अध्यापक थे सेंगाभाई, जो रास्तापाल गांव में पाठशाला चला रहे थे।

इस सारे क्षेत्र में महाराणा प्रताप के वीर अनुयायी भील बसते थे। विद्यालय के लिए नानाभाई खांट ने अपना भवन दिया था। इससे महारावल नाराज रहते थे। उन्होंने कई बार अपने सैनिक भेजकर नानाभाई और सेंगाभाई को विद्यालय बन्द करने के लिए कहा, पर स्वतंत्रता और शिक्षा के प्रेमी ये दोनों महापुरुष अपने विचारों पर दृढ़ रहे।

यह घटना 19 जून, 1947 की है। डूंगरपुर का एक पुलिस अधिकारी कुछ जवानों के साथ रास्तापाल आ पहुंचा। उसने अंतिम बार नानाभाई और सेंगाभाई को चेतावनी दी, पर जब वे नहीं माने, तो उसने बेंत और बंदूक की बट से उनकी पिटाई शुरू कर दी। दोनों मार खाते रहे, पर विद्यालय बंद करने पर राजी नहीं हुए। नानाभाई का वृद्ध शरीर इतनी मार नहीं सह सका और उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। इतने पर भी पुलिस अधिकारी का क्रोध शांत नहीं हुआ। उसने सेंगाभाई को अपने ट्रक के पीछे रस्सी से बांध दिया।

उस समय वहां गांव के भी अनेक लोग उपस्थित थे, पर डर के मारे किसी का बोलने का साहस नहीं हो रही था। उसी समय एक 12 वर्षीय भील बालिका कालीबाई वहां आ पहुंची। वह

साहसी बालिका उसी विद्यालय में पढ़ती थी। इस समय वह जंगल से अपने पशुओं के लिए घास काट कर ला रही थी। उसके हाथ में तेज धार वाला हंसिया चमक रहा था। उसने जब नानाभाई और सेंगाभाई को इस दशा में देखा, तो वह रुक गयी।

उसने पुलिस अधिकारी से पूछा कि इन दोनों को किस कारण पकड़ा गया है। पुलिस अधिकारी पहले तो चुप रहा, पर जब कालीबाई ने बार–बार पूछा, तो उसने बता दिया कि महारावल के आदेश के विरुद्ध विद्यालय चलाने के कारण उन्हें गिरफ्तार किया जा रहा है। कालीबाई ने कहा कि विद्यालय चलाना अपराध नहीं है। गोविन्द गुरुजी के आह्वान पर हर गांव में विद्यालय खोले जा रहे हैं। वे कहते हैं कि शिक्षा ही हमारे विकास की कुंजी है।

पुलिस अधिकारी उसे इस प्रकार बोलते देख बौखला गया। उसने कहा कि विद्यालय चलाने वाले को गोली मार दी जाएगी। कालीबाई ने कहा,तो सबसे पहले मुझे गोली मारो। इस वार्तालाप से गांव वाले भी उत्साहित होकर महारावल के विरुद्ध नारे लगाने लगे। इस पर पुलिस अधिकारी ने ट्रक चलाने का आदेश दिया। रस्सी से बंधे सेंगाभाई कराहते हुए घिसटने लगे। यह देखकर कालीबाई आवेश में आ गयी। उसने हंसिये के एक ही वार से रस्सी काट दी।

पुलिस अधिकारी के क्रोध का ठिकाना न रहा। उसने अपनी पिस्तौल निकाली और कालीबाई पर गोली चला दी। इस पर गांव वालों ने पथराव शुरू कर दिया, जिससे डरकर पुलिस वाले भाग गये। कालीबाई का जीवन बचाया नहीं जा सका। इस प्रकार कालीबाई के बलिदान से सेंगाभाई के प्राण बच गये। इसके बाद पुलिस वालों का उस क्षेत्र में आने का साहस नहीं हुआ। कुछ ही दिन बाद देश स्वतंत्र हो गया। आज डूंगरपुर और सम्पूर्ण राजस्थान में शिक्षा की जो ज्योति जल रही है उसमें कालीबाई और नानाभाई जैसे बलिदानियों का योगदान अविस्मरणीय है।

X

दो द्विवसीय आचार्य प्रशिक्षण वर्ग का अनुभव

अमिता प्रकाश
केन्द्रीय उपाध्यक्ष,
केन्द्रीय महिला समिति – प्रभारी
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

आचार्य प्रशिक्षण वर्ग में उपस्थित सभी शिक्षकगण, आपका हार्दिक स्वागत ! अपनी शिक्षा, संस्कृति, धर्म तथा स्वास्थ्य के विकास के लिए प्रतिभा विकास केंद्रों की शुरुआत सबसे पहले दिल्ली प्रांत में हुई। फिर धीरे–धीरे भारतवर्ष के अन्य प्रांतों में भी ये केन्द्र चल रहे हैं। इसका मुख्य कारण है आप लोगों का दृढ़ संकल्प और इच्छा–शक्ति तथा कठिन परिश्रम। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि नए शिक्षक भी पूरी ईमानदारी तथा परिश्रम के साथ प्रतिभा विकास केंद्रों के लिए कार्यरत रहेंगे।

मैं आपको राजस्थान के एक गाँव पिपलांत्री के बारे में बताने जा रही हूँ जहाँ के लोगों ने बड़े परिश्रम से तथा ईमानदारी से जल के लिए भूमि के लिए, तथा शिक्षा व पर्यावरण के लिए कार्य किया। आज न केवल वह गाँव भारतवर्ष के लिए एक उदाहरण है अपितु पूरे विश्व में लोग उसके बारे में जानने लगे हैं जहां अत्यधिक खदान होने से गांवों की भूमि चारों तरफ़ से बंजर हो गई थी। प्रदूषण इतना था कि पेड़ पौधे लगाए नहीं जा सकते थे। तभी इस गाँव के लोगों ने एक संकल्प लिया कि जब कभी भी उस गाँव में किसी कन्या का जन्म होगा तो वो लोग कन्या के नाम से 111 पेड़ लगाएंगे तथा इक्कीस हजार रु. गाँव वाले तथा दस हजार रु. कन्या के परिवार वाले जमा करेंगे, जिसे कन्या की शिक्षा तथा विवाह पर ख़र्च किया जा सके। कन्या के विवाह के बाद जो वृक्ष उसके नाम से लगाये थे वो गाँव के हो जाते हैं। इस प्रकार अब तक क़रीब 3,00,000 से ज़्यादा पेड़ लगाए जा चुके हैं जिनको उस गाँव के पुरुषों ने तथा पीड़ित, गरीब, अपंग महिलाओं ने लगाया था। इन लगाये पेड़ों के लगने से उस गाँव की भूमि–धीरे धीरे उपजाऊ हो गई, हरे भरे पेड़ लगाने से वहाँ पर ढेरों जानवरों तथा पक्षियों का वास हो गया तथा प्रदूषण भी समाप्त हो गया।

इस प्रकार आज भी उस गाँव के लोग गाँव के विकास के लिए प्रयासरत हैं, और अत्यंत विकसित गांवों में उसकी गिनती हो रही है। मित्रों ! अगर राजस्थान के छोटे से गाँव का विकास सब लोग मिल जुलकर परिश्रम, ईमानदारी से कर सकते हैं तो हम लोग भी परिश्रम, ईमानदारी तथा दृढ़ संकल्प से प्रतिभा विकास केंद्रों की गुणवत्ता को तथा संख्या को बढ़ाकर अपने समाज को, शहर को और धीरे धीरे पूरे देश को मज़बूती प्रदान कर सकते हैं।

X

वार्षिक संस्कार परिवार होली मिलन उत्सव-23 मार्च, 2024

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का 'संस्कार परिवार होली मिलन' समारोह 23 मार्च, 2024 (शनिवार) को **केन्द्रीय अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा जी** के **'सुगंधा' फार्म हाउस, छत्तरपुर नई दिल्ली** में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस भव्य समारोह में संगठन के **केन्द्रीय अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा, कार्याध्यक्ष श्री हेमन्त बत्रा जी, विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी, केन्द्रीय महामंत्री श्री बजरंगलाल बागड़ा जी, केन्द्रीय कोषाध्यक्ष श्री रमेश गुप्ता जी, जीवा आयुर्वेद के प्रणेता श्री प्रताप चौहान,** संगठन के आर्थिक सहयोगी **श्री विवेक नागपाल जी** के अतिरिक्त संगठन के समस्त कार्यकर्ता, संस्कार परिवार तथा प्रतिभा विकास केन्द्रों के आचार्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन, प्राणायाम अभ्यास के पश्चात् **ज्ञानधारा, श्री राम तथा तीर्था प्रतिभा विकास केन्द्रों** के बच्चों ने सरस्वती वंदना, झांसी की रानी तथा अन्य मनोहारी कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। इन कार्यक्रमों की तैयारी में उन केन्द्रों की आचार्यों की सराहनीय भूमिका रही। उपस्थित बच्चों को उपहारस्वरूप जैकेट प्रदान की गयीं। इसके पश्चात् वृन्दावन की **'श्याम लोक कला मंच'** टोली के कलाकारों ने होली संबंधी एकाधिक कार्यक्रमों की सजीव प्रस्तुति देते हुए फूलों की होली खेलते–खिलाते अधिकतर संस्कार परिवारों और प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चों–आचार्यों को इस फूलों की होली में सम्मिलित कर अनुपम उल्लासपूर्ण वातावरण उपस्थित कर दिया।

इन कार्यक्रमों के पश्चात् संगठन के केन्द्रीय अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा जी ने विशिष्ट अतिथियों, वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को मंच पर आमंत्रित किया। जिनमें मा0 वीरेन्द्र जी के अतिरिक्त विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष श्री आलोक कुमार, परिषद् के केन्द्रीय महामंत्री श्री बजरंगलाल बागड़ा जी, केन्द्रीय कोषाध्यक्ष श्री रमेश गुप्ता जी, संगठन कार्याध्यक्ष श्री हेमंत बत्रा महामंत्री श्री दिग्विजय गुप्ता जी महिला समिति कार्याध्यक्षा श्रीमती शशी आजाद आदि रहे। श्री मनोज अरोड़ा ने स्वयं अपने परिवारजनों की ओर से समस्त आगंतुकों का अपने निवास पर हार्दिक स्वागत तथा उपरोक्त सभी वरिष्ठों को शाल प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषाण में होली को समरसता का उत्सव बताते हुए कहा कि हम सभी को दलित, वंचित वनवासी–नगरवासी की उन्नति हेतु सहयोगी बनना होगा।

होली का उत्सव राम मंदिर निर्माण के कुछ समय बाद ही सम्पन्न हुआ। **मा0 बजरंगलाल बागड़ा जी** ने इसकी चर्चा करते हुए बताया कि हमें वर्षों की तपस्या का फल मिला है अभी भी हम देश की उन्नति से बहुत दूर हैं। मंदिर निर्माण से जो उत्साह मिला है उसे स्थायित्व देकर ही भारत माता को उच्चासन पर स्थापित कर सकते हैं। इसके लिये वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के कार्य में सहयोग करना मतलब संस्कारों की स्थापना। इस संस्कार निर्माण को हृदय में बसाना होगा। यह एक महत्वपूर्ण कार्य है, अभी इसका आकार छोटा है लेकिन प्रभावशाली होने से अवश्यम्भावी है कि हम शिखर पर पहुंचेगे। इसके लिये हम हर समय संघर्ष के Mode में रहें।

मा0 आलोक कुमार जी – होली के आनंद के साथ होलिका दहन की घटना को भी स्मण करते हुए, कहा कि हम आतंकियों के समूलनाश, सम्पूर्ण समाज में जिहादियों, नक्सलवाद को भी देश से निकालने का संकल्प लें। हमें होलिका दहन सरीखे अशुभ शक्तियों

के नाश का संदेश समाज को अपने संगठन के माध्यम से देना है। होली उत्सव पर जाति, पंथ, ऊंच–नीचे, छोटे–बड़े का भाव नहीं रहता। होली के इस समरसतापूर्ण संदेश को पूरे 365 दिन स्वयं हृदय में धारणा करते हुए समाज में फैलाना है। **हमारा वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन प्रतिभा विकास केन्द्र, संस्कार परिवार मिलन योजना तथा संस्कार परिवार निर्माण द्वारा समाज को बिना किसी भेदभाव के एक समरस समाज बनाने के प्रयास में लगा है।**

मा0 वीरेन्द्र जी – हम सब अपने परिवार व्यवसाय, समाज, संगठन के साथ इनके प्रति अपने दायित्वों से जुड़े हैं। **संगठन कार्यकर्ताओं के परिश्रम से इस वर्श 32 कार्यक्रम, 21000 परिवार संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए जिनमें प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चों ने 853 प्रस्तुति दी। यही दो वर्शों के अल्पकाल में प्रतिभा विकास केन्द्र की उन्नति की गाथा है। हमें अब भारत को 'विश्व गुरु' के रुप में पुनर्स्थापित करना है, संस्कार निर्माण ही विश्व बंधुत्व का आधार है।** अमेरिका सरीखे बड़े देशों में काफी जनसंख्या के अवसाद, अकेलेपन का शिकार होने से अब सारी दुनिया हिन्दु परिवार व्यवस्था को अपनाने की होड़ में है। अतः संस्कार परिवार मिलन को प्रभावी बनाने के लिये प्रतिभा विकास केन्द्र में पढ़ाई के साथ बच्चों के परिवारों को भी मासिक परिवार मिलन से जोड़ा गया है। अब तक देश के 2 लाख परिवार इस योजना से जुड़ गये है। मा0 वीरेन्द्र जी ने बताया कि उनके आसाम, प्रवास में बहुत से परिवारों ने इस योजना से जुड़ने का संकल्प लिया।

अभी हम 20000 रक्षा परिवार बनाने के लक्ष्य तक नहीं पहुंच सके है, अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम दैनिक संस्कार परिवार मिलन योजना से स्वयं जुड़कर अधिकाधिक परिवारों को संस्कार परिवार बनायें। इन्हीं परिवारों मे से धीरे–धीरे रक्षा परिवारों की संख्या बढ़ेगी। प्रतिभा विकास केन्द्र में नित नये आयाम जुड़ रहे हैं। झुग्गी में रहने वाले सरकारी स्कूलों के बच्चों की प्रतिभा कम नहीं है। इन बच्चों को उनेक आचार्यों तथा माता–पिता के संस्कारों ने ही तैयार किया है। आचार्या ने बच्चों में चित्रकारी की प्रतियोगिता आयोजित की जिसमें बच्चों ने अत्यन्त मनोहारी राम मंदिर का चित्र बनाया।

यह संस्कार परिवार होली मिलन कार्यक्रम श्री मनोज अरोड़ा जी के निवास पर अतीव भव्यता से सम्पन्न हुआ। उन्होंने सपरिवार इसमें रुचि लेकर खान–पान, बैठने की व्यवस्था से लेकर समस्त व्यवस्थाओं को उत्तम स्वरुप देकर आगंतुको का स्वागत किया। इस कार्यक्रम के मंच संचालन का कार्य दक्षिणी विभाग महामंत्री श्री प्रदीप कुमार जी ने सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

X

हिंदू रक्षा
VRPF

हिंदू रक्षा
VRPF
समानता!

हमारा संभागशः वार्षिक कार्यकर्ता चिंतन वर्ग सम्पन्न

वीरेन्द्र कुमार सिंह
केन्द्रीय सह–संयोजक
प्रतिभा विकास केन्द्र

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के विकास एवं संगठनात्मक चिंतन का सातत्य व गहराई दिनानुदिन बढ़ती रहे, एतदर्थ दिल्ली एन.सी.आर के तीनों संभागों का एक दिवसीय चिंतन वर्ग अलग–अलग स्थानों पर विभिन्न तिथियों में सम्पन्न हुआ। इन वर्गो का सार संक्षेप निम्नवत् है :–

संभागीय चिंतन वर्ग, उत्तरी संभाग

यह वर्ग दिनांक 28.04.2024 दिन रविवार को ''वात्सल्य मंदिर, रोहिणी सेक्टर – 6 में आयोजित हुआ। इस वर्ग में उत्तरी, पश्चिम एवं मध्य विभाग के 90 पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की उल्लासपूर्ण सहभागिता हुई। इस अवसर पर संगठन प्रभारी मान्यवर वीरेन्द्र जी की मार्गदर्शक के रूप में उपस्थिति उल्लेखनीय रही। इनके अतिरिक्त वर्ग के विभिन्न सत्रों में केन्द्रीय उपाध्यक्ष मा0 सुरेन्द्र चावला जी, केन्द्रीय मंत्री मा0 मयंक शेखर जी, श्री रमेश बंसल जी एवं श्री गजेन्द्र गुप्ता जी, श्री नवनीत भल्ला जी, श्री संजीव शर्मा जी, श्रीमती नुपूर शर्मा जी, मा0 राम विलास जी, पूनम जी, श्रीमती अनिता चावला जी, श्री मंगेश जी, श्री विजेन्द्र दूबे जी, सुश्री वर्षा जी, श्री विष्णु अग्रवाल जी आदि की विशेष भूमिका रही। समापन सत्र में दिल्ली प्रांत के प्रांत संघचालक मा0 डा0 अनिल अग्रवाल जी का प्रेरणादायी उद्बोधन प्राप्त हुआ। इस एक दिवसीय चिंतन वर्ग के विभिन्न सत्रों में हुए चिंतन –मनन की सत्रशः उल्लेखनीय बातें निम्नवत् हैं –

उद्घाटन सत्र :– उद्घाटन सत्र में **मा0 वीरेन्द्र जी** ने कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण वर्ग की महत्ता बताते हुए कहा कि हमारा संगठन कोई पारिवारिक संगठन नहीं है। यह किसी व्यक्ति विशेष के हितपूर्ति के लिए नहीं अपितु यह एक सामाजिक संगठन है जो समाज के व्यापक हित में कार्यरत है।

हमारा संगठन कालजयी बने, एतदर्थ कार्यकर्ताओं का समय–समय पर उचित प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन आवश्यक है। हमारी संस्कृति सनातन संस्कृति है, चिरपुरातन व चिरंतन है तथापि काल के प्रवाह में कतिपय कमियाँ/कठिनाइयाँ आती रही हैं। हमें पुनः इस महान संस्कृति को वैश्विक पहचान देनी है।

हम विश्व परिवार की कल्पना करते हैं। यह विश्व परिवार हमारे घर–परिवार का विस्तारित–व्यापक स्वरुप है। आज के इस वर्ग का चिंतन इस विषय पर है, हम अपने घर–परिवार की व्यवस्था कैसे सुदृढ़ करें। परिवार में सुख–शांति ही हमारे जीवन की सुख–शांति का आधार है। परिवार में सुख–शांति, सहयोग–सामज्जस्य से सुदृढ़ता आएगी और यही सबल–सुखी–समृद्ध समाज का आधार है।

द्वितीय सत्र :– केन्द्रीय मंत्री मा0 मयंक शेखर जी ने सगठन की संरचना एवं कार्यपद्धति तथा पदाधिकारियों के दायित्व की संकल्पना के प्रति कार्यकर्ताओं को बताया कि हम जिस प्रकार अपने शरीर परिवार के प्रति अपनत्व की भावना रखते हैं तथा इनके उचित सम्पोषण व विकास की चिंता करते हैं, उसी प्रकार संगठन को अपना मानकर उसके कार्य–विस्तार में अपना योगदान देना चाहिए। संघ के स्वयंसेवक जिस प्रकार एक घंटा प्रतिदिन शाखा व संघ कार्य के लिए देते हैं, यदि हम भी ऐसा निश्चय कर ले तो संगठन शीघ्र यशस्वी हो जाएगा। हमारे

संगठन का उद्देश्य नगरीय समाज को वनवासी समाज के साथ जोड़कर उनके प्रति आत्मीयता एवं बंधुत्व की भावना विकसित कर उनके बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा देकर आत्मनिर्भर, स्वस्थ एवं स्वाभिमानी राष्ट्रभक्त नागरिक बनाना है। कार्य की गुणवत्ता, विकास एवं विस्तार के लिए पिछली बैठक में विभाग, जिला एवं नगर स्तर तक की समितियों के निर्माण तथा उनके उचित प्रशिक्षण का निर्णय हुआ था। हम उसे धरातल तक उतारें, यह इस वर्ग का उद्देश्य है।

तृतीय सत्र :– केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चावला जी ने **संस्कार परिवार** की संकल्पना बताते हुए हर परिवार में प्रातः जागरण से रात्रि शयन तक की दिनचर्या बनाकर छोटे–बड़े सभी साथ मिल–बैठकर हर दिन ब्रह्मनाद, गायंत्री मंत्र, महामंत्र, महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने भजन–कीर्तन–आसन–प्रायाणाम का नियमित अभ्यास करने तथा राष्ट्रीय–सामजिक विषयों पर आपस में चर्चा करने का आग्रह किया। इनके नियमित अभ्यास से परिवार का वातावरण सुखमय–आनंदमय होगा, समृद्धि बढ़ेगी और यही परिवार 'संस्कार परिवार' बनेगा। ऐसे परिवारों की संख्या हम बढ़ाएँ, इन परिवारों का मासिक मिलन हो तथा वर्ष में एक बार बड़े पैमाने पर वार्षिकोत्सव हो, यह हमारी कार्यपद्धति है। इस प्रकार हमारा श्रेष्ठ परिवार, श्रेष्ठ समाज व श्रेष्ठ राष्ट्र बनेगा। सनातन संस्कारों से विश्व प्रभावित होगा। इस सत्र की अध्यक्षता श्री गजेन्द्र गुप्ता से की।

चतुर्थ सत्र :– श्री नवनीत भल्ला, द्वारका जिलाध्यक्ष जी ने संगठन संरचना के विभिन्न दायित्वों यथा अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री, मंत्री, कोषाध्यक्ष आदि के कार्य का विस्तार से उल्लेख किया। उन्होंने यह भी बताया कि हम अपने इष्ट मित्रों, सगे–संबंधियों, सुपरिचितों को संगठन की जानकारी दें। हमारा संगठन क्या करता है, कैसे चलता है, कार्यपद्धति क्या है तथा आय का स्त्रोत क्या है–जानकारी देनी चाहिए। ऐसे महानुभावों से अर्थ–सहयोग की दृष्टि से भी चर्चा करनी चाहिए। हमारा कार्य प्रभावी है, परिणामकारी है, प्रामाणिक है, इसका प्रत्यक्ष उन्हें अनुभव कराने से वे संगठन को सही रुप में समझ सकेंगे तथा कालांतर में उनका हर प्रकार का सहयोग मिल सकता है।

महिला विभाग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए श्रीमती नुपूर शर्मा जी ने कहा कि महिला समिति निर्माण के माध्यम से परिवारों में संस्कार निर्माण को बड़ा–योगदान मिल सकेगा। संस्कार निर्माण में महिलाओं की बड़ी भूमिका है। ये चार कुलों को एक बार संस्कारित करती है। अतएव महिला समिति को निचले स्तर तक गठन कर इन्हें मजबूत करने की आवश्यकता है।

श्री संजीव शर्मा जी, मध्य विभाग महामंत्री ने उड़ीसा की वनयात्रा का उल्लेख किया तथा अपने अनुभवों को साझा करते हुए वनजीवन शैली की सराहना की। पश्चिमी ओडिशा प्रांत के झारसुगड़ा एवं सुन्दरगढ़ के वनवासी बंधुओं से मिलकर प्रसन्नता का अनुभव किया। महानगरों के कोलाहल से प्रदूषित वातावरण से सुदूर यह वनक्षेत्र पर्यटन की दृष्टि अत्यंत मनोरम, प्रेरणास्पद एवं आनंददायी है। हमें ऐसे क्षेत्रों में जाने से उन्हें समीप से समझने का अवसर मिलता है।

युवा विभाग के श्री मंगेश जी ने प्रचार–प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया तथा संगठन के कार्य एवं परिणाम की जानकारी सोशल मिडिया, प्रिंट मिडिया के माध्यम से समाज व्यापी बनाने की आवश्यकता बताई। सुश्री वर्षा जी ने युवाओं को आसन–प्राणयाम तथा सनातन संस्कारों से जोड़ने की आवश्यकता बताई। आज के युवा भटकाव की स्थिति में है। उन्हें उचित मार्ग पर ला सकते है।

श्री विजेन्द्र दूबे जी ने युवाओं के लिए स्वास्थ्य, संस्कार शिक्षा एवं संगठन की महत्ता पर प्रकाश डाला। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन को इस दिशा

में प्रयास तेज करने की आवश्यकता है।

समापन सत्र :– मा0 वीरेन्द्र जी ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि इस्लाम के 700 वर्ष के शासन काल में भी इस्लामीकरण नहीं कर सका परन्तु अंग्रेजो ने अल्प शासन में हमें दिशाभ्रम की स्थिति में लाया है। आर्य विदेशी हैं, मूल निवासी आदिवासी है। यह हममें दिशा भ्रमित करने का विमर्श खड़ा किया।

मा0 प्रांतसंघचालक डॉ0 अनिल अग्रवाल जी ने अपने समापन मार्गदर्शन में अंग्रेजों की कुटिल चाल पर भारतीय परम्पराओं सनातन संस्कृति आस्था केन्द्रों, महापुरुषों के प्रति श्रद्धा कम हो, उन्होंने इसकी नैरेटिव गढ़ी तथा वनवासी समाज, वंचित समाज को हमसे तोड़ने का प्रयत्न किया, हमारी शिक्षा व्यवस्था को नष्ट किया।

हमें पुनः शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वदेशी, स्वावलंबन के माध्यम से आगे बढ़ना है और आत्मनिर्भर एवं अपना अमूल्य योगदान करना है तभी भारत पुनः जगद्‌गुरु बनेगा।

—— x ——

संभागीय कार्यकर्ता चिंतन वर्ग - दक्षिण संभाग

दक्षिण संभाग का एक दिवसीय चिंतन वर्ग सरस्वती बाल मंदिर, नेहरू नगर के विशाल सभागार में दिनांक 05.05.2024 दिन रविवार को संपन्न हुआ। इस वर्ग में कुल 125 प्रमुख दायित्वधारी कार्यकर्ताओं की उल्लासमयी उपस्थिति रही। वर्ग का विधिवत उद्घाटन मां सरस्वती, भारत माता एवं ओम् के चित्र के सम्मुख अधिकारी वर्ग द्वारा दीप प्रज्वलन एवं पुष्पार्चन से हुआ। इस वर्ग में संगठन प्रभारी श्रीमान वीरेंद्र जी के साथ केंद्रीय कार्याध्यक्ष मा0 हेमंत बत्रा जी, उपाध्यक्ष श्रीमती अमिता प्रकाश जी, केंद्रीय महामंत्री श्री दिग्विजय गुप्ता जी, केन्द्रीय महिला समिति कार्याध्यक्षा श्रीमती शशि आजाद जी, श्री सुखदेव जी, श्री प्रदीप कुमार गुप्ता जी, श्री आर.के. सिंह जी, श्री नरेंद्र भारद्वाज जी, श्री मित्तल जी, श्रीमती उर्मिला भट्ट जी, श्रीमती मधु जी, आदि संभाग सदस्यों ने विभिन्न सत्रों में अपने विचार प्रकट किये।

मा0 वीरेंद्र जी ने उद्घाटन सत्र में परिवार व्यवस्था की महत्ता समझाते हुए बताया कि आज अमेरिका जैसे समृद्ध देश में राष्ट्रपति चुनाव में दोनों प्रमुख दलों ने अमेरिकी जनता से परिवार व्यवस्था को मजबूत करने पर बल दिया है। उन्होंने बताया कि 2022 के अप्रैल माह में आचार्यों का प्रथम वर्ग हुआ था, उसमे मात्र 17 आचार्यों की उपस्थिति हुई थी। तब से प्रतिभा विकास केंद्र का कार्य निरंतर गतिमान है। आज 700 के लगभग आचार्य हैं तथा उतने ही केन्द्र जिनके माध्यम से वंचित समाज के बच्चों में संस्कारयुक्त शिक्षा देकर उन्हें स्वावलंबी–स्वाभिमानी नागरिक बनाने का प्रयत्न चल रहा है। इन केन्दों के माध्यम से वंचित समाज को जागृत कर उनके जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन का परिणामकारी प्रयास चल रहा है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्रीमती अमिता प्रकाश जी ने अपने–अपने परिवारों में भजन–कीर्तन तथा आसन–प्राणायाम करने की आवश्यकता बताई।

द्वितीय सत्र में श्री आर. पी. सिंह जी ने सामूहिक चिंतन एवं निर्णय की अपनी परम्परा को मजबूत करने तथा केन्द्रीय, प्रांतीय, संभागीय/विभागीय बैठकों की तैयारी, विचार–विमर्श तथा क्रियान्वयन की दिशा पर जोर दिया। अपने **अध्यक्षीय उद्बोधन में श्रीमती शशि आजाद जी** ने कार्य की दृढ़ता के लिए संगठन की मजबूती पर बल दिया।

केन्द्रीय कार्याध्यक्ष मा0 हेमंत बत्रा जी ने अपने कार्यालय/व्यवस्थापिक प्रतिष्ठान की परेशानियों से घर के वातावरण को बचाने की चिंता की। करोना काल की अपनी अनुभूति साझा करते हुए 40 दिन के काल में आसन–प्राणायाम की महत्ता स्वीकार करने का उल्लेख किया। हमारे प्रतिभा विकास केन्द्र आने वाली पीढ़ी को सनातन संस्कार से जोड़कर सुशिक्षित, सुसंस्कारित करने की दिशा में अग्रसर है। श्री सुखदेव जी ने बताया कि जिस प्रकार चेन की कोई एक कमजोर कड़ी पूरी चेन को कमजोर कर देती है, उसी प्रकार समाज का कोई भी एक वर्ग यदि कमजोर/लाचार रहे तो समाज कभी मजबूत नहीं हो सकता ।

श्री प्रदीप गुप्ता जी ने बताया कि हमारा लक्ष्य धर्मान्तरण को रोकना तथा अपने मतांतरित बंधु–बंधुओं को पुनः घर वापस लाना है। हम अपने–अपने अनुभवों का लाभ संगठन कार्य की मजबूती को दें, यह आज की आवश्यकता है। **श्रीमती उर्मिला भट्ट जी** ने संगठन में महिलाओं की सहभागिता एवं सक्रियता बढ़ाने पर जोर दिया। सभी पदाधिकारी अपनी–अपनी पत्नी को भी संगठन से जोड़ें। इससे दूसरी महिलाओं में भी संगठन के प्रति आकर्षण बढ़ेगा।

युवा विभाग के संयोजक एवं **सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री दिव्यांशु पाण्डेय जी ने** युवा विभाग की गतिविधियाँ की जानकारी देते हुए इन्हें जोड़ने में उनके कैरियर तथा संगठन कार्य के बीच सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता बताई। प्रचार

विभाग आई.टी के माध्यम से युवाओं तक अपने विचार को पहुँचा सकता है। एक्स, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, फेसबुक आदि के माध्यम से हम विचारों का प्रसार कर सकते है। तथपि Virtually की अपेक्षा Physically प्रत्यक्ष उपस्थिति द्वारा रुप से संगठन की आवाज हृदय तक पहुँचती है।

केन्द्रीय महामंत्री श्रीमान दिग्विजय गुप्ता जी ने वनयात्रा के अनुभवों का बड़ी सरलता से सबके सम्मुख सजीव चित्रण किया। वनवासी बन्धुओं के आतिथ्यभाव, स्नेह, निश्छल प्रेम से सभी अभिभूत रहे। वनयात्रा क्रम में वहाँ का जलप्रपात सबकी निगाहें स्वाभाविक रूप से आकर्षित कर रहा है।

मुक्त चिंतन :— इस सत्र में निम्न सुझाव मिले —

- श्री नरेन्द्र भारद्वाज जी का सुझाव था कि प्रतिभा विकास केन्द्रों में संगीत शिक्षा की दृष्टि से स्थायी आचार्य हों जिनका उपयोग विभिन्न प्रशिक्षण वर्गों में तथा क्रमिक रूप में विभिन्न केन्द्रों पर हो।
- बच्चों की माताओं के लिए भी प्रौढ़ महिला साक्षरता केन्द्र चलाया जाना चाहिए।
- प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चे 8वीं के बाद क्या करेगे, उसकी भी ठोस योजना हमें बनानी चाहिए। यह श्री सुखदेव जी का सुझाव था।
- श्री प्रदीप गुप्ता जी ने षट्कर्म क्रिया को जोड़ने की आवश्यकता बताई।
- श्री नरेन्द्र जी का सुझाव था कि बच्चों की श्रेष्ठ प्रतिभाएँ ट्विटर / एक्स पर अपलोड हों।

समापन मार्गदर्शन :— विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय महामंत्री मा0 बजरंगलाल बागड़ा जी का हुआ। उन्होंने आज देश में तथा विश्व स्तर पर चल रहे फेक नैरेटिव से बचते रहने तथा उनके प्रतिकार के प्रति जागरूकता पर बल दिया।

अंत में शांति मंत्र के साथ वर्ग सम्पन्न हुआ।

X

उड़ीसा वनयात्रा - 12 से 16 अप्रैल, 2024

प्रदीप कुमार गुप्ता
दक्षिणी विभाग – महामंत्री

जय श्री राम! हमारे रग–रग में राम हैं, उसी मनोभाव के साथ हमारा वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन राम और हनुमान मिलन के उद्देश्य को लेकर कार्य कर रहा है।

इसी विचार को लेकर संगठन द्वारा उड़ीसा वनयात्रा का वार्षिक आयोजन किया, जिसके संगठन के 22 मुख्य कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

हमारी यात्रा 12 अप्रैल 2024 से आरम्भ हुई, दिल्ली एयरपोर्ट से कोलकाता, झारसुगुड़ा यात्रा तय की। कोलकाता हवाई अड्डे का नाम नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नाम पर था एवं झारसुगुड़ा हवाई अड्डे का नाम वीर सुरेन्द्र साईं के नाम पर था। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस नाम आते ही गर्व की अनुभूति होती है, ऐसे ही वीर सुरेन्द्र साई भी एक स्वतंत्रता सेनानी थें। दिनकर डेरा का भी देश की अजादी में योगदान रहा। ये नाम हमें देश के प्रति समर्पण भाव याद दिलाते रहते है।

इसी क्रम में हम झारसुगुड़ा हवाई अडडे पर सांय 7:20 बजे पहुंचे। वहां पहुंचकर एक प्राकृतिक निर्मलता का आभास हुआ, अच्छा लगा।

वहां हमारा आत्मीय स्वागत विश्व हिन्दु परिषद पश्चिम उड़ीसा के अधिकारी श्री अशोक गांधी जी , अच्युतानंद जी द्वारा किया गया। हमारे सभी सुविधाओं का ध्यान बहुत ही प्रेमपूर्ण एवं अपनेपन का रहा। रात्री विश्राम एवं अल्पाहार के बाद हमारी पहली वनयात्रा 13 अप्रैल 2024 को झारसुगुड़ा से कोइली धुधर (जिसे कोयल का घर कहते है) जलप्रपात की रही, जो 50 किलोमीटर दूरी पर था। यह स्थान घने जंगलों के बीच प्रकृति की गोद में अत्यन्त रमणीय स्थल है। वहां कर्म मंदिर व आश्रम स्थित है।

इस स्थल पर जाकर आप स्वयं को उस बहते जल में नहाने से रोक नही पाते है। कल–कल करते झरने में मछलिया बहुत हैं, जिन्हें वहां के लोग पकड़ने या किसी को भी शिकार करने नहीं देते, बल्कि उनके खाने की व्यवस्था करते हैं।

जलप्रपात के एवं मंदिरो के दर्शन के पश्चात स्थानीय लोगों द्वारा पकाया हुआ तृप्तिदायक स्थानीय भोजन किया। इनके भोजन का स्वाद उनके प्रेमभाव के कारण मानो भगवान के प्रसाद की तरह लगा।

फिर हमारी यात्रा आगे बढ़ी, विश्व हिन्दू परिषद् धर्म प्रसार विभाग द्वारा आयोजित स्थान वखाहलि पहुंची। वहां प्रकृति की गोद में वृक्षों की छांव और धूप के बीच एक स्थल पर एक टैन्ट लगाया गया जिसमें श्री राधाकृष्ण मन्दिर, वनयात्रा तथा चैतन्य परम्परा के भजन–सत्संग का आनन्द लिया। महाप्रभु के भक्तों का भक्ति में डूबकर भजन–गायन मानो शरीर को हल्का निर्मल एवं पवित्र करुणा मय होने का अहसास दे रहा था, मानो कन्हैया बांसुरी बजा रहे हो और गोप–गोपिया मगन होकर नृत्य कर रही हों।

भजन के पश्चात कई लोगो ने अपनी बात रखी, संगठन प्रभारी मा. वीरेन्द्र जी ने अपने संगठन के संस्कार पक्ष को स्पष्ट कर वहां लोगो की जिज्ञासाओं को शान्त किया एवं धर्म प्रसार, सनातन की घर वापसी घर चर्चा हुई।

अगले दिन धर्म प्रसार विभाग, विश्व हिन्दु परिषद्, द्वारा आयोजित कार्यक्रम में वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा पश्चिम उड़ीसा के संयोजक श्री गिरद्विज प्रसाद अग्रवाल का केन्द्रीय महामंत्री श्री दिग्विजय गुप्ता जी द्वारा पटका पहना कर स्वागत किया गया। वहां हम सब का भी सम्मान व स्वागत हुआ। श्री वीरेन्द्र जी ने संगठन के संस्कार पक्ष व अन्य विषयों पर वहां बड़ी संख्या में उपस्थित लोगो से चर्चा की एवं अन्य लोगो ने भी अपनी बात रखी।

बैठक के बाद हम सभी ने भोजन की व्यवस्था का आनन्द किया। तत्पश्चात हमारी अगले पड़ाव की तरफ यात्रा आरम्भ हुई। बहुत बड़ी संख्या में स्थानीय लोगो ने अपनी पारम्परिक नृत्य कला में, भरी दोपहर में ढोल–नगाड़ो के साथ तथा महिलाओं ने पारम्परिक नृत्य के साथ हमारा स्वागत किया। ये सब बहुत अद्‌भुत व अकल्पनीय था। इस स्वागत में उनकी कला, उनका प्रेम समर्पण आतिथ्य–भाव देखकर हम अचंभित थे। उनका नृत्य ऐसा था मानो जल में तरगें नृत्य कर रही हों। महिलाओं एक दूसरे को पकड़कर नृत्य करती हुई मानो प्रेम से एक साथ रहने का संदेश देती हों।

पुरुषों द्वारा ढोल–नगाड़ो की थाप व नृत्य करना मानो 'आगे बढ़ो' का संदेश दे रहा था। ये जो स्वागत था वह मेरे लिये कमी न भूलने वाला सदैव प्रेरणा देने वाला, आनन्दित करने वाला व अभाव में भी आनन्द से रहने का संदेश देने वाला था।

यहां हम भारतीय जनसेवा संस्थान सरस्वती शिशु मन्दिर, गरिपामुण्डा उड़ीसा में भवन विस्तारीकरण, निर्माण के उद्‌घाटन हेतु आये थे। यहां पर बड़ी संख्या में नर–नारी एवं विद्यार्थी थे। उनके द्वारा मंचीय प्रस्तुति को देखकर गांवो के प्रति विचारों में बहुत परिवर्तन आया, महसूस हुआ कि यहां के आचार्य, आचार्या बहुत मेहनत करते हैं। दशावतार, राम आरती, राष्ट्रभक्ति जैसे विषयों पर बच्चों की बेहद ऊर्जावान प्रस्तुति थी जिसे देखकर हमारे सभी साथी बच्चो की विडियों बनाने, फोटो, लेने से स्वयं को नही रोक पाये।

तत्पश्चात हमने इस गांव के दर्शन किये जहां हमें अपने बचपन की याद ताजा हो गई। जिस तरह हमारे गांवो में गाय के गोबर से लीपना दही, छाछ निकालने के लिये मटकी रई की व्यवस्था होती थी, खाटों पर लेटना, तुलसी का पौधा, घर के पीछे छोटी बागवानी होना। सभी स्नेही लोग थे, बहुत अच्छा लगा। स्वच्छ प्रदूषण से मुक्त स्थल पर हम हजारों कोस दूर आये ऐसा लगा मानो वहां के पेड़ पौधे कह रहे हो तनाव युक्त रहना हो तो प्रवृति से जुड़कर रहना होगा।

कार्यक्रम के दौरान मंच पर श्री वीरेन्द्र जी ने संगठन के बारे विस्तार से चर्चा की जिससे मंच पर बैठी एक स्थानीय महिला उद्योगपति ने हमारे संगठन के काम से प्रभावित होकर हमें अल्पाहार का निमंत्रण किया और शाम का अल्पाहार हमने उनके फार्म हाउस पर जाकर किया। काफी नौकर होने के बाड भी उन्होंने अल्पाहार स्वयं अपने हाथों से हम सब को परोसा बहुत मान–सम्मान किया एवं उन्होंने मोदी जी से मिलने की इच्छा जाहिर की।

अगले दिन हमने झारसुगुड़ा के स्थानीय मन्दिरों के दर्शन किये। हमारे साथ जो विश्व हिन्दू परिषद् उड़ीसा के अशोक गांधी जी थे, उनका वहां एक परिवारिक मन्दिर था। वहां हमने देवी के दर्शन

किये, बैठकर अभी तक की यात्रा का अनुभव साझा किया।

घर वापसी को लेकर यानि ईसाईकरण पर चर्चा, हुई। विश्व हिन्दू परिषद् घर वापसी को लेकर अथक प्रयास कर रहा है। उन्होंने हजारों लोगों की घर वापसी कराई है, लेकिन ईसाई मिशनरी जिस तरह कार्य कर रही है उसमें अभी हमारे घर–वापसी अभियान को ज्यादा मेहनत व ससांधनों की जरूरत है।

रात्रि पुरी में बीती। अगले दिन जगन्नाथ जी के दर्शन का सौभाग्य मिला। विशाल मन्दिर प्रांगण और ये प्राचीन मन्दिर भारत के उड़ीसा राज्य के समृद्धि, कला, उन्नति, ज्ञान, परिश्रम, पुरुषार्थ, विज्ञान आदि देश के घनाढ्यं होने की गवाही दे रहा था। मन्दिर के प्रागंण में भगवान जगन्नाथ का बड़ा मन्दिर व प्रांगण में चारो ओर छोटे–छोटे मन्दिर मानो सबको साथ लेकर चलने का संदेश दे रहा है। मन्दिर में एक अलग स्थान की व्यवस्था थी जहां सैकड़ो दुकाने लगी है जो स्थानीय लोगों के रोजगार का साधन बना हुआ था।

भगवान जगन्नाथ का दर्शन करने का अलग ही अनुभव हुआ, उसको शब्दों में बताना कठिन जान पडता है। भगवान जगन्नाथ से प्रार्थना की, ''प्रभु फिर से बुलाना और ज्यादा दिनों के लिये बुलाना जिससे कुछ और जान सकूं आपके दर्शन कर सकूं।''

अगली यात्रा कोणार्क सूर्य मन्दिर की रही। सूर्य मन्दिर को देखकर रोमांच आ रहा था तो उसके खण्डहर को देखकर दुख हो रहा था। सूर्य मन्दिर का निर्माण महाराजा नरसिंह ने 1250 ईस्वी में अपनी माता की इच्छानुसार किया था। मन्दिर को 24 पहिये वाले रथ की आकृति में बनवाया है, यानि यह हमारी प्राचीन घड़ी है इसमें सात घोड़े बने हैं। इस मन्दिर में दो सिहों को हाथी पर आक्रमण की मुद्रा में दिखाया गया है।

निश्चित ही इसका कोई प्रतीकात्मक सन्देश रहा होगा। कोणार्क मन्दिर में बाहर की दीवारों पे पहियों के साथ अलग–अलग संदेश देती मूर्ति कला का अद्भुत चित्रण किया हुआ है जिसमें कई प्रकार की नृत्य कला को दर्शाया गया है।

उड़ीसा की यात्रा बहुत ही आनन्दमय एवं रोचक रही। प्रत्येक स्थान पर ज्यादा समय बिताने एवं समझने की इच्छा रही, लेकिन सामूहिक यात्रा व समय की एक मर्यादा होती है। इस तरह की एक

जय उड़ीसा जय जगन्नाथ

X

विश्व हिन्दु परीषद-धर्म प्रसार विभाग, सुन्दरगढ़

सतसंग | संकिर्त्तन्य महा

श्रीहनुमच्चरितम् (क्रमश.............)

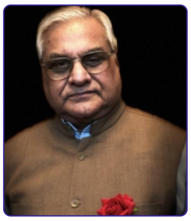

आर्य रविदेव गुप्ता
अध्यक्ष–दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
चेयरमैन–हिन्द पुनरूत्थान संघ ट्रस्ट

सम्पूर्ण हिन्दु समाज के आराध्य हनुमान जी मेरे हृदय में एक महाशक्तिशाली, ज्ञानवान्, अंजनी–पवन के पुत्र श्रीरामदूत के रुप में, एक महामानव के रूप में विद्यमान हैं। इसी भाव से अभिभूत होकर बाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस तथा हनुमान चालीसा के गहन अध्ययन के बाद मुझे अनुभव हुआ कि इतना सर्वगुण सन्पन्न रामसेवक कोई मनुष्येतर प्राणी (बन्दर) नहीं हो सकता।

अपने इसी विचार को मैंने समय–समय पर श्रद्वालु समाज के समक्ष व्याव्यान रूप में प्रस्तुत किया। कोरोना काल में संयोग से ऑनलाइन माध्यम से भारत के अतिरिक्त जब इटली, जर्मनी, लेबनान, इंगलैंड व अमेरिका के प्रवासी भारतीयों ने अपने आराध्य ज्ञानगुण सागर–अतुलित बलधाम हनुमान जी के वास्तविक स्वरूप को सुना तो उन्होंने मुझसे इस तथ्य को एक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध कर समस्त विश्व के समक्ष रखने हेतु करने का अनुरोध किया।

इसी के परिणामस्वरूप 10 अध्यायों में 'श्रीहनुमच्चरितम्' पुस्तक लिखित रूप में प्रस्तुत कर पाया हूँ। आप सब प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष पुस्तक के प्रथम अध्याय, द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ अध्याय इस 'वनांचल की पाती' के अंकों में पूर्व में प्रस्तुत किये जा चुके हैं। इस अंक में उसी का पंचम अध्याय यहाँ प्रस्तुत है।

पंचम अध्याय-सुन्दरकांड

सुन्दरकाण्ड ही नाम क्यों ?

बाल्मीकि रामायण के 6 कांड मे से 5 कांड के नाम जीवन की अवस्था यथा बालकांड या स्थान विशेष के नाम यथा 'अयोध्या कांड, किष्किन्धा कांड' आदि रखे गये हैं। क्या यह विचारणीय नहीं है कि केवल यह पंचम कांड ही सुन्दरकांड क्यों कहा जाता है जिसका न अवस्था और न ही स्थान से कोई संबंध है। महर्षि वाल्मीकि व गोस्वामी तुलसीदास दोनो ने इसी नाम को ही रखा।

इसका उत्तर यह है कि सम्पूर्ण कथा श्रीराम के गुणों तथा उनके पुरूषार्थ की परिचायक है, श्रीराम ही उन अध्यायों के नायक हैं, **परन्तु सुन्दरकांड के नायक केवल और केवल हनुमान हैं।** यह काण्ड हनुमान जी के लंका की ओर प्रस्थान, समुद्र पार करना, लंका नगरी में प्रवेश, विभीषण से भेंट, युक्तिपूर्वक सीताजी से भेंट कर, उनका विश्वास प्राप्त कर उन्हें श्रीराम की मुद्रिका देना, अक्षय कुमार का वध, मेघनाद के पाश में बंधकर रावण के समक्ष उपस्थित होना, फिर लंका–दहन और सीता माता से चूड़ामणि प्राप्त कर, लंका से वापस श्रीराम के पास पहुंचने की यात्रा है। ये प्रसंग हमें उनकी अतुलनीय शक्ति, अद्भुत विलक्षण बुद्धि–कौशल तथा उनके अजेय योद्धा व संकट–मोचक चरित्र का दर्शन कराते हैं।

सुन्दरकांड अध्याय में हमें उनके अनुपम गुणों

की, श्रीराम के सेवक के रूप में अंहकारशून्य कर्मों के सौन्दर्य की एवं एक अद्वितीय व्यक्तित्व की छवि की स्पष्ट परिकल्पना मिलती है।

श्रीराम सेवक हनुमान

हनुमान के कर्मों का सौन्दर्य

सुन्दरकांड में हनुमान जी के अहंकार–शून्य कर्मों का अनुपम सौन्दर्य हमें उनके निम्न क्रिया–कलापों से स्पष्ट होता है :–

➤ चुनौती को अवसर में बदलने की क्षमता

किष्किन्धा कांड के अंत में, घटनाक्रम के चलते, लंका में सीता जी को ढूंढकर उनकी कुशलता जानने हेतु जाम्बवंत ने हनुमान को समुद्र लांघने की प्रेरणा दी तथा उनके स्वयं के जन्म के उद्देश्य का स्मरण कराया–

''कवन सो काज कठिन जग माहीं,
जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।''

रामचरितमानस, सुन्दरकांड 29.3

यह सुनकर हनुमान जी को अपनी शक्ति का भान हुआ, वे एकदम सक्रिय हो गये – 'राम काज कीन्हे बिना मोहि कहाँ विश्राम।''

➤ परिस्थिति अनुकूल आचरण

उनमें परिस्थिति के अनुकूल स्वयं को ढाल लेने की अद्भुत योग्यता थी। समय–समय पर उनके लघु, अतिलघु एवं विराट रूप देखने को मिलते हैं।

श्रीहनुमान के बहुरूप का अर्थ है आवश्यकता के अनुसार अपने व्यक्तित्व (Profile) को बदलने की क्षमता।

'सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा,
बिकट रूप धरि लंक जरावा।
भीम रूप धरि असुर संहारे,
रामचन्द्र के काज संवारे।।' श्रीहनुमानचालीसा

त्रुटिहीन संयमी व्यक्तित्व

सीता माता की खोज करने रूपी रामकाज के प्रति ध्येयव्रती होकर जब हनुमान रावण के अन्तःपुर में सोई हुई अस्त–व्यस्त परिस्थिति में स्त्रियों को देखते हैं तो भी अखण्ड ब्रह्मचारी होने के कारण उनमें कोई काम–विकार नहीं जागा। उनके मन में यह प्रश्न उठ जाता है :–

''परदारावरोधस्य प्रसुप्तस्य निरीक्षणम्,
इदं खलु ममात्यर्थ धर्मलोपं करिष्यति।।''

वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकांड 11.38

''पराई स्त्रियों को सोती अवस्था में देखना मेरा यह कर्म, धर्म द्वारा अर्जित मेरे पुण्य को नष्ट तो नहीं कर देगा ?''

ऐसा प्रश्न मन में आने पर हनुमान को उसी समय अपने ही मन से समाधान मिल गया –

''मनो हि हेतुः सर्वेषामिन्द्रियाणां प्रवर्तने,
शुभाशुभं स्वावस्थासु तच्च मे सुव्यवस्थितम्।।''

वाल्मीकि रामायण सुन्दरकांड 11.42

''अर्थात् इन्द्रियों को शुभाशुभ कार्यों में प्रेरित करने वाला मन मेरे वश में है। अतः मुझे इस अधर्माचरण से पाप नहीं लगेगा।'' यह घटना उनके विवेक, धर्म बुद्धि

व अखण्ड ब्रह्मचर्य की द्योतक है।

अद्वितीय रणनीति निपुणता

राक्षसराज रावण की लंका में प्रवेश करने पर घूमते हुए राक्षसों के निवास के बीच उन्हें एक सुन्दर महल दिखाई दिया, जिसमें बने एक मंदिर से 'राम–नाम' के स्मरण की आवाज सुनी–

''भवन एक पुनि दीख सुहावा,
हरि मंदिर तहं भिन्न बनावा।'' 4.4
''राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा,
हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा।।'' 5.2

रामचरितमानस, सुन्दरकांड

इस प्रकार उन्होंने विभीषण की खोजकर, शत्रु के दुर्ग में छिद्र कर दिया। उसको प्रभु शरण में आने को उद्यत कर, रावण के राज दरबार में स्वयं जाने के लिये अनेक उपद्रव किये। विभीषण से परस्पर वार्तालाप कर वे उनके मित्र हो गये।

''तुम्हरो मंत्र विभीषन माना,
लंकेश्वर भये सब जग जाना।''

श्रीहनुमानचालीसा

➤ पूर्ण आत्म–नियंत्रण

विभीषण से सीता को ढूंढने की युक्ति पाकर हनुमान ने अशोक वाटिका में सीता जी के दर्शन कर रात्रि वृक्ष पर ही व्यतीत की। प्रातः रावण द्वारा सीता की प्रताड़ना तथा अन्य राक्षसियों की सीता को डराने संबंधी सारी बातचीत सुनी। हनुमान चाहते तो उसी समय नीचे उतरकर रावण का प्राणांत कर सकते थे, परन्तु विपरीत परिणाम की आशंका से उन्होंने स्वयं पर नियंत्रण कर निश्चित किया कि वे माता जानकी के प्रत्यक्ष दर्शन कर उन्हें श्रीराम द्वारा रावण के नाश तथा उनको ले जाने के प्रति आश्वस्त करके ही जाएंगे।

➤ मनोविज्ञानी

हनुमान जी ने गम्भीर चिंतन कर सीता के समक्ष अचानक ही जाने से पहले सीता का विश्वास अर्जित करने का निश्चय किया, अन्यथा सीता सोच सकती थी कि रावण रूप बदलकर आ गया है। अतः वे वृक्ष पर बैठे–बैठे ही प्रचलित संस्कृत भाषा में श्रीराम का गुणगान करने लगे तथा उन्होंने अब तक की राम कथा कह सुनायी।

महर्षि बाल्मीकि सीता की उत्सुकता को इस प्रकार प्रगट करते हैं–

''येन मे कर्णपीयुषं वचं समुदीरितम्,
स दृश्यतां महाभागः प्रियवादी ममाग्रतः।''

सीताजी कह रही हैं– ''जिसने मुझे कानों के लिये अमृत समान वचन सुनाये, वह मेरे सामने प्रकट हो।''

इसी प्रसंग का तुलसीदास निम्न प्रकार से वर्णन करते हैं–

''श्रवनामृत जेहि कथा सुहाई,
कही सो प्रगट होति किन भाई।

रामचरितमानस, सुन्दरकांड 12.4

➤ आश्वस्तिपूर्ण व्यवहार

अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय देते हुए हनुमान जी वृक्ष से नीचे उतरकर सीता जी के सामने आये और श्रीराम द्वारा भेजी गई मुद्रिका देकर स्वयं को 'राम का दूत' सिद्ध किया।

''रामदूत मैं मातु जानकी।
सत्य सपथ करूना निधान की।।
यह मुद्रिका मातु मैं आनी।
दीन्ही राम तुम्ह कहँ सहिदानी।।''

रामचरितमानस सुन्दरकांड 12.5

बदले में उन्होंने माता सीता से चिन्ह स्वरूप चूड़ामणि श्रीराम व अन्य सभी को विश्वास दिलाने के लिये प्राप्त करने की प्रार्थना की :–

'मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा।
जैसे रघुनायक मोहि दिन्हा।।''

रामचरितमानस सुन्दरकांड 26.01

➤ **प्रत्युत्पन्न मति**

हनुमान जी में सीताजी को अशोक वाटिका से ही रावण से छिपाकर वापिस लाने का सामर्थ्य था, परन्तु अपने इस सामर्थ्य को सीताजी द्वारा मर्यादा विरूद्ध जानकर उन्हें समझ आ गया कि श्रीराम–रावण युद्ध तो अवश्यम्भावी है।

निर्दिष्ट दायित्व से भी बढ़कर उद्यमिता

हनुमान जी ने तुरंत निर्णय लिया कि अब स्वयं का तथा रावण का शक्ति–परीक्षण देना–लेना आवश्यक हो गया है। अतएव **'रामदूत'** की भूमिका अंगीकार कर स्वयं रावण से भेंट करने की योजना बनाई। सीता जी ने उनको आशीर्वाद दिया :–

'अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता,
अस बर दीन जानकी माता।'

श्रीहनुमानचालीसा

लंका में अशोक वाटिका में पेड़ उखाड़ने तथा वहाँ के रक्षक राक्षसों का एवं रावण के पुत्र अक्षय कुमार का संहार आदि उपद्रव करने के बाद हनुमान से युद्ध करने मेघनाद आया।

➤ **अतिशय निर्भीकता**

हनुमान जी ने रावण के समक्ष प्रस्तुत होने के लिये स्वयं मेघनाद के नागपाश में बंधना स्वीकार किया। दरबार में स्वयं रावण को शांति का संदेश दिया, परंतु बात न मानने पर रावण को चेतावनी भी दी। क्रुद्ध रावण ने दरबार में हनुमान जी को मारने का आदेश दिया तब विभीषण ने 'दूत अवध्य होता है' का नियम स्मरण कराया। इस प्रकार विभीषण की मैत्री ही हनुमान की जान बचाने का कारण बनी।

➤ **अजेय योद्धा**

लंका विध्वंस कर, हनुमान प्रभु की शक्ति का प्रमाण देकर, एवं अकेले ही रावण से आधा युद्ध जीतकर वापस आये तथा श्रीराम एवं समस्त सैनिकों को शुभ समाचार दिया। तब जामवन्त ने कहा–

'नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी,
सहसहु मुख जाइ न बरनी।'

रामचरितमानस, सुंदरकांड 29.5

➤ **अप्रतिम कर्त्तव्यबोध एवं विनम्रता**

हनुमान जी के मुख से लंका में हुए घटनाक्रम तथा सीता की खोज का वृत्तान्त सुनकर श्रीराम हनुमान जी के ऋणी हो गये–

''रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई,
तुम मम प्रिय भरतसम भाई।''

श्रीहनुमानचालीसा

''सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं,
देखऊ करि विचार मन मोही।''

रामचरितमानस सुंदरकांड 31. 7

श्रीराम के मुख से ये शब्द सुनकर उन्हें स्वयं पर तनिक भी अहंकार नहीं हुआ। वे बोले –

''सो सब तव प्रताप रघुराई,
नाथ न कछु मोरी प्रभुताई।
चरन परंक प्रेमाकुल,
त्राहि त्राहि भगवन्त।।''

रामचरितमानस सुन्दरकांड 32.9

हनुमान जी का यह उत्तर विनम्रता व निराभिमानिता की पराकाष्ठा है, एक उज्जवल कीर्तिमान है।

निष्कर्ष :– हमें 'सुंदर कांड' का केवल पठन ही नहीं, अपितु इस पाठ को ग्रहण करने की आवश्यकता है अर्थात् हनुमान के गुणों को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिये।

'सत्यं शिवं सुन्दरम्'

सत्य कल्याणकारी होने से ही सुन्दर होता है।

X

महिला समिति, पश्चिमी विभाग चिंतन वर्ग

मधु सेठ
पश्चिमी विभाग महिला समिति–प्रभारी
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

आजकल के इस भाग–दौड़ भरे जीवन में कुछ कार्य अपने राष्ट्र–हित के प्रति समर्पित करने की भावना से जन–जागरण हेतु महिला समिति पश्चिमी विभाग प्रभारी श्रीमती मधु सेठ जी द्वारा 22 जून को एक चिंतन वर्ग का आयोजन उनके निवास पर दोपहर 03:00 बजे से आयोजित किया गया जिसमें लगभग 35–40 बहनों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में राष्ट्र सेविका समिति की पूर्व पार्षदा, पश्चिमी विभाग महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती अमिता सैनी, महामत्री नीलम ग्रोवर, संगठन मंत्री श्यामा वर्मा तथा संगठनों से भी कुछ बहनों ने भाग लिया। संगठन प्रभारी मा० वीरेन्द्र जी की गरिमामय उपस्थिति तथा मार्गदर्शन से उपस्थित बहने लाभान्वित हुई।

महिला समिति, मध्य विभाग चिंतन वर्ग

प्रोमिला ओबराय
मध्य विभाग महिला समिति–प्रभारी
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

महिला समिति मध्य विभाग प्रभारी श्रीमती प्रोमिला ओबराय जी ने समिति की बहनों के सहयोग से 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जिसमें प्रतिभा विकास केन्द्र नारायणा के बच्चों ने योग किया और गीत सुनाये। संगठन प्रभारी मा० वीरेन्द्र जी ने बच्चों का मार्गदर्शन किया। केन्द्रीय महिला समिति प्रभारी श्रीमति अमिता प्रकाश जी ने अन्तर्राश्ट्रीय योग दिवस को मनाने सम्बन्धी विस्तृत जानकारी दी। योगाचार्या श्रीमती रीटा जी ने बच्चों को योग का महत्व बताया तथा योग करवाया। कार्यक्रम को सफल बनाने में बहन सुनीता जी, विभा जी, मीनाक्षी जी एवं आचार्या आभा जी का सहयोग रहा।

पर्यावरण प्रदूषण का समाधान : यज्ञ - हवन अनुष्ठान

गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र'
वरिष्ठ साहित्यकार, लेखक

हमारा पर्यावरण पृथ्वी पर स्थित पेड़ – पौधों, प्राणियों, जंगलों, नदियों तथा पर्वतों से बना है। इसी को प्रकृति भी कहते हैं। 'पर्यावरण' शब्द परि तथा आवरण से बना है। परि का अर्थ परितः (चारों ओर), आवरण का अर्थ है आच्छादित। अतः पर्यावरण का अर्थ है कि चारों ओर से घिरा हुआ। पर्यावरण के लिए परिवेश, वातावरण, परिस्थिति जैसे शब्द भी प्रयोग में लाए जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर की सृष्टि में जो कुछ भी है,वह सब पर्यावरण है।

पर्यावरण प्रदूषण आज सभी की चिंता का कारण बन गया है। आधुनिकता की दौड़ में आगे निकलने की होड़, अंधाधुंध विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम दोहन, बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण,प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग, औद्योगिकीकरण, पृथ्वी, सागर और पर्वत पर विस्फोट, वृक्षों का कटान, वाहनों और मशीनों का धुआँ आदि के समन्वित प्रभाव से आज धरती का पर्यावरण इस सीमा तक घातक हो चुका है कि जल. थल और वायुमण्डल सभी में निवास करने वाले जीव–जन्तुओं और वनस्पति का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। मनुष्य गलियों, सड़कों पर. जहाँ चाहे वहाँ कूड़ा–कचरा, टायर , रबड़, प्लास्टिक, पराली आदि जलाकर वायु को प्रदूषित कर रहा है।

वायु प्राणशक्ति ही है। उसके बिना जीवन असंभव है। वैदिक उद्घोष है कि स्वच्छवायुसेवन ही हितकर है, वही हमारे हृदय को शांतिकर–सुखकर औषधि प्रदान करता है तथा आयुर्वृद्धि करता है –

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे।

परंतु विडंबना यह है कि आज हम घरों के भीतर भी प्रदूषण के दुष्प्रभावों से सुरक्षित नहीं रह गए हैं, वायु प्रदूषण इतना अधिक बढ़ चुका है कि साँस लेना दूभर हो गया है।

महानगरों की दशा बहुत ही शोचनीय है। यहाँ प्रदूषण का कारण दैनिक गैसीय उत्सर्जन लगभग 3000 मैट्रिक टन होता है, जिसमें 70 प्रतिशत वाहनों और थर्मल पावर प्लांट तथा 13 प्रतिशत औद्योगिक इकाइयों से और 17 प्रतिशत अन्य साधनों से होता है। वायु प्रदूषण से कार्बन डाईआक्साइड, कार्बन मोनोआक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, सीसा आदि वातावरण में भर जाता है, जिससे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण की मुख्य समस्या का आधिपत्य समस्त दिशाओं में स्थापित है, जो वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और भूमि प्रदूषण के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है,

किंतु सभी प्रदूषणों में अत्यंत विकराल समस्या 'वायु प्रदूषण' की है, क्योंकि इसी वायु प्रदूषण से जल प्रदूषित होता है और जल से भूमि, भूमि से अन्न. अन्न से मन, मन से विचार, विचार से बुद्धि. बुद्धि से कर्म और कर्म से सब कुछ प्रदूषित हो जाता है।

यह प्रदूषण की समस्या मात्र भारत की नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व की सबसे बड़ी समस्या है। इसी समस्या के परिणामस्वरूप वायुमण्डल में सूर्य से निकलने वाली अनेक हानिकारक किरणें जैसे – पराबैंगनी (अल्ट्रा वायलेट रेज) किरणों आदि से पृथ्वी को बचाने में प्राकृतिक सुरक्षा कवच के रूप में स्थापित ओजोन की पर्तों में बड़े–बड़े छिद्र हो गए हैं, जिससे यह हानिकारक किरणें पृथ्वी पर पहुँच रही हैं और 'ग्लोबल वार्मिंग' की स्थिति समस्त प्राणियों को हानि पहुँचा रही हैं। फलतः अनेक प्रकार के बैक्टीरिया और वायरस नाना प्रकार के रोगों को जन्म दे रहे हैं। आज लगभग प्रत्येक व्यक्ति, यहाँ तक कि पशु – पक्षी तथा वनस्पतियाँ भी विभिन्न रोगों से प्रभावित होकर नष्ट एवं लुप्त हो रहे हैं।

विचारणीय है कि पेड़ जीवित प्राणी हैं, वे भी साँस लेते हैं। पेड़ – पौधों की श्वसन प्रणाली में भी मनुष्यों के समान आक्सीजन और कार्बन डाई – आक्साइड की ही भूमिका है, अंतर केवल इतना ही है कि मनुष्य दिन तथा रात्रि दोनों कालों में आक्सीजन लेते हैं और कार्बन डाई – आक्साइड छोड़ते हैं, किन्तु कुछ के अतिरिक्त वृक्ष दिन में

कार्बन डाई आक्साइड लेते हैं और आक्सीजन छोड़ते हैं और रात में इसके विपरीत श्वसन क्रिया करते हैं। इसी के साथ वायुमण्डल में उपस्थित नाइट्रोजन गैस भी वनस्पति के लिए आवश्यक तत्व है। इसके विपरीत वायुमण्डल में उपस्थित कार्बनमोनोआक्साइड, कार्बन डाईसल्फाइड, सल्फर डाईआक्साइड आदि विषैली गैसें मनुष्य के साथ – साथ पेड़ – पौधों के लिए भी हानिकारक हैं। अब जब इन विषैली गैसों की उपस्थिति और संपर्क में वृक्ष ही स्वस्थ और जीवित नहीं बचेंगे, तो वे मनुष्यों को क्या और कैसे लाभ पहुँचा सकेंगे!

पर्यावरण शुद्धि के लिए आर्ष ग्रंथो में हैं यज्ञ – हवन के निर्देश

आज विश्व में अनेक प्रकार के शोध हो रहे हैं, किन्तु अभी तक कोई ऐसा शोध नहीं हो पाया है, जो इस प्रदूषण की समस्या का निराकरण कर सके। आज तक पूरी दुनिया में ऐसा कोई भी साधन, यंत्र या क्लीनर नहीं बना है, जो वायुमण्डल के प्रदूषण को स्वच्छ कर सके। ऐसी स्थिति में संसार के प्राचीनतम ग्रंथ 'वेद' तथा भारतीय दर्शन में ऋषियों द्वारा बताए गए 'यज्ञ – हवन अनुष्ठान' उपाय पर दृष्टि डालनी होगी।

प्राचीनतम ग्रंथ वेद में बताया गया है –

1. यज्ञ(हवन /अग्निहोत्र) के द्वारा वायु और वर्षा – जल की शुद्धि होती है। (यजुर्वेद अ. 1,मंत्र – 20)
2. यज्ञ द्वारा शुद्ध किया गया वर्षा – जल औषधियों को पुष्ट करने वाला होता है। (यजुर्वेद अ. 2.मंत्र–1)
3. मनुष्यों को वायु और जल की शुद्धि करके श्रेष्ठ और उत्तम सुख प्राप्त करने के लिए सुगंधित, पौष्टिक, औषधि तथा गोघृत आदि पदार्थों की आहुति करके नित्य प्रति यज्ञ–हवन करना चाहिए। यज्ञ करने से संसार में सब रोग आदि नष्ट होकर, उसमें शुद्ध गुण प्रकाशित होते हैं। (यजुर्वेद अ. 1,मंत्र – 13)

अग्नि में जिन – जिन पदार्थों से हवन किया जाता है, अग्नि के द्वारा परमाणु रूप हुए उन पदार्थों को सूर्य अपनी किरणों के द्वारा खींचकर वायु के संयोग से रासायनिक क्रिया कराकर मेघ – मण्डल में स्थापित करता है और फिर वर्षा के द्वारा उन्हें पृथ्वी पर गिरा कर प्राणियों को सुख प्रदान करता है।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में यज्ञ करने का उपदेश दिया है–तुम लोग यज्ञ के द्वारा पवन देवता, वरुण देवता अर्थात वायु और जल को उन्नत करो. तब वे देवता तुम्हें उन्नत (संतुष्ट तथा पुष्ट) करेंगे।

(गीता अध्याय–3,श्लोक– 11)

भगवत गीता में ही यज्ञ की महत्ता बताते हुए कहा गया है कि यज्ञ से बादल बनते हैं, बादलों से अन्न का निर्माण होता है और अन्न से प्राणी जीवित रहते हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में अथर्ववेद के मंत्र को उद्धृत करते हुए कहा है कि जो संध्याकाल में हवन किया जाता है, वह सायंकाल से लेकर प्रातःकाल तक और जो प्रातःकाल हवन किया जाता है, वह प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक, वायु की शुद्धि द्वारा सुखदायक तथा आरोग्यकारक होता है।

(अथर्ववेद काण्ड – 19, सूक्त –55,मंत्र 3, 5)

नामधारी सिखों के नियम–गुटके में लिखा है कि साहिब गुरु गोविंद सिंह जी की यज्ञ–हवन में बड़ी प्रीति थी–

हम जब हवन जग्य करवै हैं। खुश होइ घन जल बहु बरसैहैं।
पवन हवन ते शुद्ध भवै है। रोग सोग सब दूर नसै हैं।

हवन–यज्ञ तो हमारे धर्म का सार है। इसे तो राजे–महाराजे, ऋषि–मुनि और अवतार करते आए हैं, जिससे भारी अकाल, खाद्यान्न संकट , अनावृष्टि तथा संक्रामक रोग आदि का दुःख नहीं होता था। इसीलिए रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में राम, लक्ष्मण, सुमित्रा. वशिष्ठ. विश्वामित्र, अर्जुन, भीम, युधिष्ठिर तथा कृष्ण द्वारा यज्ञ – अग्निहोत्र का नित्य अनुष्ठान करने के प्रसंग प्राप्त होते हैं। महर्षि मनु ने भी

मनुस्मृति में प्रतिदिन प्रातः – सायं यज्ञ करने के लिए निर्देशित किया है।

यज्ञ – हवन की वैज्ञानिकता पूर्णतः प्रमाणित

हमारे प्राचीन ऋषि – मुनियों ने वैज्ञानिक आधार पर शोध करके यज्ञ – सामग्री तथा समिधाओं का चयन किया था, जैसे बड़, पीपल, आम, बिल्व, पलाश, शमी, गूलर, अशोक, पारिजात, आंवला आदि वृक्षों की समिधाओं का घी सहित यज्ञ – हवन में विधान किया था, जो आज विज्ञान सम्मत है। यज्ञ का वैदिक उद्देश्य भी पर्यावरण शुद्धि एवं संतुलन है। एक वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार अग्नि पदार्थों के सूक्ष्मतिसूक्ष्म होने पर उनकी क्रियाशीलता बढ़ जाती है। यज्ञ में डाली गई समिधा अग्नि द्वारा विघटित होकर सूक्ष्म बनती है और विस्तृत क्षेत्र को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति एक चम्मच घी खाता है, तो केवल उसी को स्वास्थ्य लाभ मिलता है, किंतु यज्ञ कुंड में एक चम्मच घी हवन द्वारा अनेक व्यक्तियों को लाभ पहुँचाता है, क्योंकि यज्ञाग्नि के प्रभाव से वहाँ की वायु हल्की होकर फैलने लगती है और उस रिक्त स्थान में यज्ञ से उत्पन्न शुद्ध वायु वहाँ पहुँच जाती है।

प्रायोगिक अध्ययनों से सिद्ध हो चुका है कि जिन घरों में नियमित रूप से यज्ञ (हवन) किया जाता है, वहाँ शारीरिक रोग या बीमारी की घटनाएँ नहीं होती हैं, क्योंकि इससे शुद्ध, पौष्टिक और औषधीय वातावरण बनता है। यज्ञ में धूनी देने वाले पदार्थों के घटक इलेक्ट्रानों के माध्यम से शुद्धि इस प्रक्रिया का स्पष्ट प्रभाव है।

डॉ हाफकिन के अनुसार – '' घी, चावल, केसर और चीनी को मिलाकर जलाने से धुआँ निकलता है, जिससे कई रोगों के कीटाणु मर जाते हैं। हविष्य में विद्यमान शर्करा में वातावरण शुद्ध करने की पर्याप्त क्षमता होती है। **एक रूसी वैज्ञानिक के अनुसार** यदि गाय का घी यज्ञ अग्नि में डाला जाए तो धुएँ से परमाणु विकिरण का प्रभाव पर्याप्त स्तर तक कम हो जाता है। यज्ञ कुंड में गाय के गोबर के उपले जलाने पर मीथेन विघटित होकर पर्याप्त भाग में हाइड्रोजन उत्पन्न करती है जो ग्लोबल वार्मिंग को रोकने का सर्वोत्तम साधन है।

सूक्ष्म जीव विज्ञान के शोधकर्ताओं द्वारा माना गया है कि अग्निहोत्र के धुएँ से हानिकारक बैक्टीरिया और अन्य सूक्ष्म जीव नष्ट हो जाते हैं। जब यज्ञ किया जाता है. तो थाइमोल, यूजेनॉल, पाइन, टैरपिनॉल जैसे पदार्थ और चंदन. गुग्गुल, अगर, तगर, इलायची, देवदार, कपूर और लौंग को जलाने से अनेक कृमिनाशक गैसें निकलती हैं, जो वायुमण्डल की अपवित्रता को नष्ट करती है।इन गैसों के प्रसार के कारण वातावरण में सुगंध को आसानी से अनुभव किया जा सकता है।

निष्कर्ष :– यज्ञ किसी वर्ग विशेष या संप्रदाय से जुड़ा मात्र आस्था का प्रतीक या कर्मकाण्ड नहीं है, जिसमें देवताओं को प्रसन्न करने के उद्देश्य से हवन कुंड के भीतर अग्नि प्रज्ज्वलित कर कुछ मंत्रों को बोलकर स्वाहा–स्वाहा की ध्वनि के साथ घी और हवन सामग्री की आहुतियाँ डाली जाती हैं। **अपितु यज्ञ पदार्थ विज्ञान पर आधारित रसायन शास्त्र से जुड़ी पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखते हुए जीव–जंतुओं तथा वनस्पतियों के बीच संतुलन बनाए रखने की एक सरल,दोष रहित एवं पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया है।** अतः यदि संपूर्ण मानव जाति नियमित रूप से यज्ञ – हवन करना आरंभ कर दे, तो पेड़ – पौधे, वनों, पर्वतों एवं आकाश को सुरक्षित,स्वच्छ, संरक्षित तथा विस्तारित किया जा सकता है। यह पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के समाधान में एक धनात्मक कदम होगा।

अस्तु. आइए हम सब सामूहिक यज्ञ का संकल्प लें – 'यज्ञ को अपनाइये, वायु प्रदूषण भगाइये।'

एकाधिक प्रांतों में आचार्य प्रशिक्षण वर्ग सम्पन्न

वीरेन्द्र कुमार सिंह
केन्द्रीय सह–संयोजक
प्रतिभा विकास केन्द्र

हम सुपरिचित हैं कि वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन वन बंधुओं एवं नगरीय वंचित समाज के समग्र विकास तथा उनके शैक्षिक संस्कारात्मक, आत्मनिर्भरता एवं स्वाभिमान जागरण के लिए समर्पित राष्ट्रवादी सामाजिक संगठन है। इसके तत्वाधान में आज भारत की 14 प्रांतों में परिवार संस्था के सुदृढ़ीकरण तथा हिंदू सनातन संस्कारों के संरक्षण, संपोषण एवं सम्वर्द्धन का कार्य निरंतर चल रहा है। इसी कड़ी में प्रतिभा विकास केंद्र के माध्यम से वनों, ग्रामीण एवं झुग्गी झोपड़ियां में निवास करने वाले अभावग्रस्त वंचित परिवारों के बच्चों को निशुल्क शिक्षा व संस्कार देकर उनके स्वाभिमान को जागृत करने, उनकी अन्तर्निहित विशिष्ट प्रतिभाओं को संवारने, सजाने, प्रस्फुटित करने का प्रयास चल रहा हैं। इस महती प्रयत्न की महत्वपूर्ण कड़ी है। हमारे आचार्यगण। योग्य चरित्रवान ध्येयनिष्ठ आचार्यों की साधना एवं विश्वास से केंद्र में अध्यनरत बच्चों का विकास हो रहा है हमारे आचार्यों की क्षमता योग्यता में निखार आए तथा संगठन की उद्देश्यानुकूल अपनी कार्य पद्धति का सम्यक् अनुभव प्राप्त कर अपनी प्रतिज्ञा बढ़ा सके। एतदर्थ समय–समय पर इनके यथायोग्य प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

इस कार्य के लिए विभिन्न प्रांतो के आचार्य के लिए निर्धारित त्रिदिवसीय आवासीय प्रशिक्षण वर्ग निम्नवत संपन्न हुए हैं :–

➢ **त्रिदिवसीय नवीन आचार्य प्रशिक्षण राजगंगपुर, सुंदरगढ़, उड़ीसा** :– यह त्रिदिवसीय वर्ग दिनांक 19 से 21 अप्रैल 2024 को संपन्न हुआ। इस वर्ग में जिला के 15 नवीन आचार्य ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। वर्ग में प्रशिक्षित के नाते श्री धनंजय कुमार सिंह एवं श्री संजीव कुमार साहू पूरे समय तक रहे। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के संगठन प्रभारी एवं विश्व हिन्दू परिषद् के केंद्रीय सह मंत्री मा0 वीरेन्द्र जी तथा केंद्रीय महामंत्री मा0 दिग्विजय गुप्ता जी की उपस्थिति प्रेरणादाई रही।

➢ **द्विदिवसीय आचार्य विकास वर्ग दिमाकुच्ची उदालगिरी, असम** :– कार्यरत आचार्यों का यह वर्ग भूटान सीमा पर स्थित दिमाकुच्ची प्रखंड केंद्र के श्री शंकर देव सत्र के विशाल सभागार में दिनांक 17 से 19 मई, 2024 को संपन्न हुआ। इस वर्ग में असम प्रांत के सीमावर्ती दो जिले–उदालगुड़ी एवं उत्तरी लखीमपुर से कुल 34 कार्यरत आचार्य, कुल 40 प्रतिभागियों की सराहनीय उपस्थिति हुई।

➢ **नवीन आचार्य प्रशिक्षण वर्ग, दीमाकुच्ची** :– यह वर्ग दिनांक 19 से 22 मई, 2024 को उदालगुड़ी जिला के दिमाकुच्ची प्रखंड मुख्यालय पर संपन्न हुआ। इस वर्ग में उत्तरी लखीमपुर जिला के 04 प्रखंडों तथा उदालगुड़ी जिला के रौटा हुआ, दीमाकुच्ची 2 प्रखंडों के कुल 53 नये आचार्यों की सहभागिता हुई। इन दोनों ही वर्गों में प्रशिक्षक के नाते केंद्रीय सहसंयोजक श्री वीरेंद्र कुमार कौण्डिन्य एवं श्री बलराम सिंह पूरे समय उपस्थित रहे। समापन समारोह में उदालगुड़ी जिले के मा0 जिला संघचालक श्री खगेन्द्र डेक्का जी, जिला कार्यवाह श्री ध्रुवज्योति बोरो, विश्व हिन्दू परिषद् के जिला सभापति श्री नृपेन्द्र शर्मा जी तथा जिला संपादक श्री मदन राभा जी का प्रेरणास्पद मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में स्थानीय बंधुजन उपस्थित थे। आगत अतिथियों का स्वागत एवं परिचय तथा मंच संचालन वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के प्रांत संयोजक श्री मिंटू राजवंशी जी ने किया। इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथियों–प्रतिभागियों के प्रति आभार ज्ञापन श्री

करणसेन बरुआ ने किया। व्यवस्था की दृष्टि से श्री एकलव्य तांती, श्री दीवान एक्का एवं श्री दल बहादुर क्षेत्रीय आदि कई कार्यकर्ता दिन–रात लगे रहे।

➤ **आचार्य प्रशिक्षण वर्ग सिलीगुड़ी** :– यह दिनांक 24 से 26 मई 2024 को विश्व हिंदू परिषद सभागार पंजाबी पाड़ा सिलीगुड़ी सोल्लास में संपन्न हुआ। इस वर्ग में उत्तरी बंगाल प्रांत के अलीपुरद्वार एवं मालदा जिला से कुल 47 आचार्यों की सहभागिता हुई। इस वर्ग में प्रशिक्षक के नाते केंद्रीय सहसंयोजक श्री वीरेंद्र कुमार कौण्डिन्य तथा श्री रतन चक्रवर्ती, श्री प्रदीप थापा का योगदान प्रशंसनीय रहा। इस अवसर पर अपने केन्द्रीय संगठन प्रभारी जी का मार्गदर्शन तथा पूरे समय तक विश्व हिन्दू परिषद् के प्रांत संगठन मंत्री मा0 अनूप माडल जी की उपस्थिति हम सबके लिए उत्साह जगाने वाली रही। इस अवसर पर सेवाव्रती श्री श्याम माडल, श्री अंकुरित क्षेत्रीय, श्री गौर हरि नायक एवं श्री सुमन लेट का योगदान सराहनीय रहा।

➤ **नवीन आचार्य प्रशिक्षण वर्ग हेसलपीरी, राँची** :– यह वर्ग दिनांक 28 से 30 मई 2024 को मान्य केंद्रीय संगठन प्रभारी श्रीमान वीरेंद्र शर्मा जी के सानिध्य में रांची जिलान्तर्गत बुढ़म् प्रखंड के हेसलपीरी पंचायत भवन में संपन्न हुआ। इस वर्ग में केंद्रीय सहसंयोजक श्री वीरेंद्र कुमार कौण्डिन्य एवं श्री धनंजय कुमार सिंह के मार्गदर्शन में कुल 19 आचार्यें की सहभागिता रही। इस अवसर पर सेवाव्रती श्रीमान आशा सिंह एवं श्रीमती वीणा देवी का सराहनीय सहयोग मिला। समापन सत्र में हेसलपीरी गांव की कतिपय में महिलाओं की सहयागिता उल्लेखनीय रही।

➤ **आचार्य प्रशिक्षण वर्ग छतरपुर** :– माता कात्यानी की स्नेह छाया में अध्यात्म साधना केंद्र छतरपुर दिल्ली में दिल्ली एन.सी.आर की आचार्यों का द्विदिवसीय आचार्य प्रशिक्षण वर्ग दिनांक 01 व 02 जून, 2024 को संपन्न हुआ। इस वर्ग में 70 नवीन आचार्य तथा 53 कार्यरत आचार्य सहित 9 पूर्णकालिकों एवं 12 अधिकारियों की प्रेरणादायी उपस्थिति रही। वर्ग में अधिकारियों के नाते संगठन के केंद्रीय अध्यक्ष श्री मनोज अरोड़ा जी, केंद्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती अमिता प्रकाश जी केन्द्रीय महिला समिति कार्याध्यक्षा श्रीमती शशि आजाद जी, केंद्रीय महामंत्री मा0 दिग्विजय गुप्ता जी, दक्षिण विभाग के महामंत्री श्री प्रदीप गुप्ता जी, महरौली जिला अध्यक्ष श्री आर.के.सिंह जी, महामंत्री श्री नरेंद्र भारद्वाज जी, मंत्री श्री विपिन बिहारी सिंह जी, आदि कई प्रबुद्ध जनों की उपस्थिति एवं प्रेरणादायी मार्गदर्शन से संपूर्ण वातावरण उत्साहवर्द्धक रहा। प्रशिक्षण के नाते श्री वीरेंद्र कुमार कौण्डिन्य, श्री बलराम सिंह, श्री धनंजय कुमार सिंह, श्री अंगद कुमार सिंह, श्री भरत सिंह, श्री रतन कुमार, श्री सौरभ कुमार श्रीमती दिव्या, श्रीमती शारदा, सुश्री महक कश्यप, आदि की सहभागिता हुई। व्यवस्था की दृष्टि से श्री मनीष तिवारी, सुश्री रंजना सिंह, अवनीश गुप्ता, मदन कुमार जी आदि का योगदान प्रशासनीय रहा।

X

VRPF
वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन
वन एवं नगरीय वंचित समाज के उत्थान को समर्पित
दो दिवसीय आचार्य प्रशिक्षण वर्ग
तिथि :- 01 जून, 2024 से 02 जून, 2024
स्थान : अध्यात्म साधना केन्द्र, छत्तरपुर, नई दिल्ली
पंजीकृत कार्यालय :- बी- 4, द्वितीय तल, हाउसिंग सोसाइटी, साउथ एक्स पार्ट-१, नई दिल्ली- 110049
सम्पर्क सूत्र :- 011 . 47980066, 47011669, 9667260911 Email : vrpfdelhi8@gmail.com, Website : vrpf.org.in
वनवासी रक्षा परिवार फाउण्डेशन
संस्कार परिवार योजना

रामायणकालीन राजनीतिक व्यवस्थायें

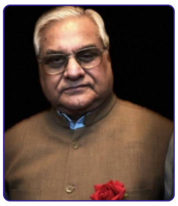

आर्य रविदेव गुप्ता
अध्यक्ष–दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
चेयरमैन–हिन्द पुनरूत्थान संघ ट्रस्ट

भारत में प्रायः महान व्यक्तित्वों को दैवीय रूप में प्रदर्शित करने की परंपरा रही है, जिससे उनका पुण्यस्मरण तो स्थाई हो जाता है लेकिन उनके महान लौकिक कार्य ढक जाते हैं। श्रीराम भी इस राष्ट्र के ऐसे ही महानायक है। प्रभु श्रीराम श्रेष्ठतम एवं आदर्श पुत्र, भ्राता, पति, मित्र, संवेदनशील, परोपकारी, धर्मज्ञ, सत्यनिष्ठ, जितेन्द्रिय, धैर्यवान, गुरु, शिष्य, सेनानायक एवं वीतराग राजा जैसे मानदंड स्थापित करने वाले इस राष्ट्र की शाश्वत स्मृति में मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर स्थापित हो गए, लेकिन राज्य सिंहासन पर आसीन होने के उपरांत उन्होंने संपूर्ण आर्यावर्त की एकता, अखंडता व सुरक्षा हेतु जो अद्भुत कार्य किये, वह चर्चा में नहीं आते हैं जबकि आज उन्हें राजनीति व सैन्य विज्ञान की कक्षाओं में पढ़ाये जाने की अतीव आवश्यकता है।

राजनीति एवं युद्ध कौशल की चर्चा होते ही द्वापर के योगेश्वर श्रीकृष्ण की चपल छवि के कारण उनका कूटनीतिज्ञ स्वरूप जनमानस में स्थापित हो गया है। श्रीराम की सरल छवि के नीचे उनका श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ रूप सर्वथा आच्छादित हो गया है। वास्तविकता तो यह है दोनों ही युगपुरुष अपने–अपने देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार तत्कालीन सर्वश्रेष्ठ कूटनीतिज्ञ तथा लगभग एक जैसी कार्यशैली के अनुपालक थे। उनकी कार्यशैली की समानता निम्न चार सिद्धांतों पर स्पष्ट रूप से आधारित दृष्टिगोचर होती है।

1. युद्ध शत्रु के ही क्षेत्र में लड़ना।
2. सैन्य प्रयोग के लिए उचित अवसर की प्रतीक्षा करना।
3. युद्ध से पूर्व शत्रुपक्ष में छिद्र कर अपने समर्थक उत्पन्न करना।
4. न्यूनतम बलप्रयोग द्वारा अधिकतम परिणाम लेने का प्रयास करना।

सम्पूर्ण रामायण का विश्लेषणात्मक अध्ययन हमें उनके समस्त अभियानों में उपरोक्त सिद्धान्तों के प्रभाव का स्पष्ट दर्शन कराता है। आईये ! हम कतिपय घटनाओं के आधार पर इस विषय की विवेचना करते हैं।

हम पाते हैं कि श्रीराम के राजनैतिक व सैन्य जीवन का प्रारंभ लगभग सोलह वर्ष की आयु में ही हो गया जब मुनि विश्वामित्र उन्हें उनके पिता महाराज दशरथ से राक्षसों के वध हेतु मांगकर ले गए थे।

सिद्धाश्रम (आज का बक्सर) अभियान :– उनके जीवन का प्रथम अभियान था विश्वामित्र के सिद्धाश्रम के समीप स्थित रावण की सैनिक चौकियों के विरुद्ध जिसका नेतृत्व यक्षिणी ताड़का कर रही थी, जो स्वयं राक्षस सुंद के लव जिहाद सरीखे जाल में फंसकर 'रक्ष धर्म' में धर्मातरण के बाद उससे उत्पन्न पुत्र मारीच और सुबाहु के सहयोग से उस क्षेत्र के आर्यों को तेजी से रक्षधर्म में धर्मांतरित कर रही थी।

हमारी संस्कृति में स्त्री को अवध्या जानकर श्रीराम के मन के द्वंद्व का मुनिश्री द्वारा धर्म की सूक्ष्म व्याख्या द्वारा समाधान, उनका राजधर्म का पहला पाठ था। नरमांस भक्षण, स्त्री–अपहरण व बलात्कार, लूट और शोषण के विरुद्ध उस क्षेत्र में मुनि

विश्वामित्र के नेतृत्व में जनाक्रोश पहले से एकत्रित था, आवश्यकता थी केवल न्याय के लिये अधिकृत नेतृत्व की, जो श्रीराम ने उन्हें प्रदान किया। संपूर्ण जनपद में राक्षसों को समाप्त कर उस क्षेत्र में व्याप्त आतंकवाद का उन्मूलन कर, दुष्टों को भय व सज्जनों को निर्भय कर राजधर्म का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया।

अहिल्योद्धार प्रसंग : मुनि विश्वामित्र द्वारा मिथिला की ओर ले जाए जाते हुए मार्ग में महर्षि गौतम के निर्जन आश्रम में परित्यक्ता तपस्विनी देवी अहिल्या के दर्शन कर, उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद मांगना, समाज में न्याय व्यवस्था को पुनर्प्रतिष्ठित करने का राजसत्ता की ओर से प्रयास का श्रेष्ठ उदाहरण है। समुचित न्याय न मिल पाने के कारण जड़वत हो गई एक महिला को उसका सम्मान लौटा देने से श्रीराम ने स्त्री समाज के स्वाभिमान की रक्षा की।

मिथिला में धनुष यज्ञ : अपने अतुलनीय पराक्रम, विनम्रता व अत्याकर्षक व्यक्तित्व के कारण मिथिला नरेश, राजपरिवार व प्रजाजनों के लिए आशा का केंद्र बन गए श्रीराम ने मुनि विश्वामित्र के विश्वास पर खरा उतरते हुए महाराज जनक की प्रतिज्ञा को पूर्ण कर एक ऐसे विवाह का मार्ग प्रशस्त कर दिया, जो समाज के लिए तो रोमांच का विषय था ही, आर्यावर्त की तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों को सशक्त करने का अत्यंत दूरगामी माध्यम सिद्ध हुआ। अवध व मिथिला राज्य की स्थाई एवं सुदृढ मैत्री, कालांतर में श्रीराम की दक्षिण भारत में दिग्विजय का आधार बनी। इतना ही नहीं, उस काल में राजसत्ता पर धर्मसत्ता का आधिपत्य कितना अधिक था कि मुनि विश्वामित्र स्वविवेक के आधार पर ही राम तथा लक्ष्मण को मिथिला ले जाने का निर्णय कर लेते हैं, अवध के सभी युवराजों का विवाह भी निश्चित कर देते हैं और महाराज दशरथ की सम्मति अथवा अनुमति की आवश्यकता भी नहीं अनुभव करते हैं। राष्ट्रहित में ऋषि–मुनि ही इस प्रकार के राजनितिक निर्णय ले लेते थे, और राजसत्ता केवल उनके परामर्श को आदेश रूप में स्वीकार करती थी।

परशुराम प्रसंग : ब्राह्मण कुल में उत्पन्न महर्षि परशुराम क्षत्रिय वर्ण धारण कर जब विवाह उपरांत मार्ग में बारात को रोक कर अत्यंत अपमानजनक व्यवहार भी करते हैं तो श्रीराम उनको प्रत्युत्तर में अत्यंत शालीनतापूर्वक अपने पराक्रम का प्रमाण प्रस्तुत कर संतुष्ट करते हैं। उनकी कीर्ति विनष्ट करके भी अपने प्रत्यंचा पर चढ़े बाण का उनके चरणों की ओर संधान करके उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करना उस काल में ब्राह्मण समाज की निर्विवाद प्रतिष्ठा का प्रमाण है।

राज्याभिषेक एवं वनवास प्रसंग : महाराज दशरथ

चक्रवर्ती सम्राट होते हुए भी, राज्य में व्याप्त अराजकता पर अंकुश लगाने में असमर्थ, एक दुर्बल शासक सिद्ध हो रहे थे। युवराज भरत व शत्रुघ्न की अनुपस्थिति में ही, मोह वश राम का राज्याभिषेक करने का अव्यवहारिक निर्णय लेकर परिवार में विद्रोह की स्थिति उत्पन्न करने का कारण बनते हैं। महारानी कैकेयी का एक अद्वितीय योद्धा व राजकार्य में प्रवीण होना, उस काल की स्त्रियों की राजनीति में सहभागिता का अनुपम उदाहरण है। युद्ध में महाराज की प्राणरक्षा करने के पुरस्कार स्वरूप प्राप्त दो वर का कितना विलक्षण उपयोग वह करती है ऐसा कोई दूसरा उदाहरण परवर्ती इतिहास में देखने में नहीं आता है। अयोध्या में इस 'प्रीति' व 'नीति' के घमासान में महारानी कैकेयी, समस्त अपयश स्वीकार करके भी राष्ट्र व समाज धर्म की रक्षा को व्यक्तिगत एवं पारिवारिक धर्म से ऊपर वरीयता देकर, अनीति से बचाने हेतु, चट्टान बनकर, संपूर्ण रामायण की जननी बन सदा के लिए स्वयं व श्रीराम को भी अमर कर गई।

वर्णाश्रम व्यवस्था में सामाजिक समानता की स्थापना :– वनगमन के प्रारम्भ में ही गंगा नदी पार करने हेतु श्रीराम ने शृगवेरपुर के निषादराज गुह से प्रत्यक्ष आलिंगन कर मैत्री, स्वतंत्रता व समानता के संबंध स्थापित किये, और यह विशाल क्षेत्र में फैली, निम्नवर्ण मानी जाने वाली स्वाभिमानी जाति सदैव के लिये अवध राज्य के प्रति श्रद्धावनत हो गई। समाज के चारों वर्ण आर्य ही होते हैं और उनमें कोई भी छोटा–बढ़ा नहीं होता, अस्पृश्य नहीं होता, उनका यह आचरण राजसत्ता द्वारा स्वयं स्थापित आदर्श था। सामाजिक समरसता ही राजनीतिक संबंधों को सुदृढ़ कर एक अजेय शक्ति का निर्माण करती है।

वनवास की अवधि में दक्षिण दिशा की ओर अभियान : अपने पिता दशरथ द्वारा दक्षिण में शंबर के नेतृत्व में असुरों के विरुद्ध उनके सैन्य अभियान की असफलता से राम ने वन्य जाति बहुल क्षेत्रों, राजकीय सैन्य अभियान की निरर्थकता को समझ लिया था। इसलिए चित्रकूट और दंडकारण्य में राम ने वन्य जातियों यथा शबर, भील. कोल आदि के बीच में उन्हीं जैसा जीवन जीते हुए इन जातियों का संगठन किया, उनमें जीवन सुधार व सैन्य प्रशिक्षण द्वारा नैतिकता व आत्मविश्वास का संचार किया।

चित्रकूट : चित्रकूट में भरत मिलाप के अवसर पर स्थानीय वन्यजनों द्वारा अवधवासियों का **आत्मीयतापूर्ण भावभीना स्वागत व सेवा इस तथ्य की पुष्टि करता है कि नगरों में सम्मान मिलता है पर वनवासियों में श्रद्धा मिलती है। संग्रह से संतुष्टि हो सकती है पर तृप्ति तो त्याग से ही सभव है।**

निशिचर विहीन करने की प्रतिज्ञा :– दंडकारण्य में राक्षसों के आतंक से पीडित ऋषि–मुनियों के निवेदन पर श्रीराम ने ऋषि सुतीक्ष्ण के समक्ष समस्त जनपद को निशिचर विहीन करने की प्रतिज्ञा कर सारे प्रजाजनों को सम्मोहित कर दिया।

शूर्पणखा प्रसंग :– शूर्पणखा प्रसंग से अपने समर्थकों व अध्दालु प्रजाजनों में अपने चरित्र के प्रति अगाध विश्वास उत्पन्न किया।

शबरी प्रसंग :– शबर अर्थात बहेलिया जाति में तथाकथित निम्नकुल में उत्पन्न तपस्विनी शबरी के आश्रम में स्वयं जाकर उसे कृतार्थ करना श्रीराम की प्रजावत्सलता का अनुपम उदहारण है। **राजसत्ता जब स्वयं समाज के अंतिम व्यक्ति तक चलकर**

पहुँचती है तो घोर असभ्य जंगली जातियों में से ही ऐसी अजेय शक्ति का निर्माण होता है जो नितांत साधनहीन राजा को भी संपूर्ण जनबल एवं सैन्य शक्ति से सुसज्जित कर रावण जैसे दुर्दांत शत्रु पर विजय प्राप्त करने का साधन बनती है।

विभीषण को शरणागति : लंका पर चढ़ाई करने के पूर्व ही आकस्मिक रूप से विभीषण का आना व श्रीराम द्वारा उसे 'आओ लंकेश' कहकर शरणागति देना एक अति कुशल राजनीतिज्ञ होने का प्रमाण है। लंका में विभीषण के विद्रोह व पलायन तथा उसे लंकापत्ति के रूप में मान्यता देकर उन्होंने न केवल रावण की कमजोरियों को जान लिया बल्कि संधि–प्रस्ताव भेजकर अपने व रावण दोनों पक्षों में अपने नैतिक बल को मजबूत कर लिया और इसके बाद ही उन्होंने युद्ध प्रारंभ किया।

लंका युद्ध कांड : जब विभीषण की सहायता से मेघनाद का वध हो गया तो उन्होंने विभीषण को रावण से टकराने की छूट दे दी क्योंकि अब रावण द्वारा विभीषण को पुनः अपनाने की सारी संभावनायें नष्ट हो चुकी थीं। सुग्रीव के राज्याभिषेक के साथ साथ अंगद के युवराज्याभिषेक व अंगद के दूतकर्म के पश्चात विभीषण के प्रसंग में श्रीराम के चरम कूटनीतिक चातुर्य के दर्शन होते हैं और यह तीन प्रसंग ही उनके राजनैतिक व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिये काफी हैं।

किष्किंधा व लंका के मध्य सामंजस्य : लंका में विभीषण और दक्षिण भारत में सुग्रीव दोनों उनकी मैत्रीपूर्ण अधीनता स्वीकार करते ही थे और दोनों शक्तियों में विजित और विजेता संबंध का विवाद कभी भी उत्पन्न न हो सके, इसके लिए विभीषण के गुप्त अनुरोध पर उन्होंने अपने ही बनाए रामसेतु को मध्य से इतना भंग करवा दिया कि वानर सेनायें कभी भी लंका पर और लंका निवासी राक्षस जो अब आर्य संस्कृति को स्वीकार कर चुके थे दक्षिण भारत पर आक्रमण न कर सकें।

अयोध्या प्रवेश से पूर्व सतर्कता : वनवास से लौटने के पश्चात सीधे अयोध्या न जाकर भरद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुंचना व वहां से हनुमान को अयोध्या व भरत की मनःस्थिति को भांपने के लिये अग्रिम दूत के रूप में भेजना उनकी राजोचित सतर्कता का अनुपम उदाहरण है।

रामराज्य की स्थापना : श्रीराम ने एक ऐसे आदर्श राज्य की स्थापना की जिसकी युगों–युगों से आजतक चर्चा होती आ रही है और जिसकी उपमा केवल 'राम राज्य' ही हो सकती है।

रामचरितमानस ने बहुत ही मनोहारी व् विस्तृत वर्णन किया है जिसके कुछ अंश उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। आइये देखते हैः– ''बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग

चलहि सदा पावहि सुखहि नहीं भय सोक न रोग।
दैहिक दैविक भौतिक तापा,
रामराज नहीं काहुहि व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती,
चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीति।''

आज भी वर्तमान प्रजातांत्रिक व्यवस्था में आदर्श राज्य की कल्पना राम–राज्य के रूप में ही की जाती है। श्रीराम एक कुशल प्रशासक, प्रजावत्सल राजा व राजधर्म के अनुसार निर्धारित राजनीति के विशारद के रूप हमारे सम्मुख आते हैं।

X

प्रतिभा विकास केन्द्र - मासिक परिवार मिलन

दिव्या
निरीक्षिका–उत्तरी विभाग

बच्चों के पालन–पोषण में परिवार की अहम भूमिका होती है। जन्म से , यह समाजीकरण की पहली ईकाई है जिसके संपर्क में बच्चा आता है और उसे ऐसा वातावरण और अनुभव प्रदान करता है जो उन्हे समाज में कार्य करने के लिए आवश्यक कौशल और मूल्यों को विकसित करने में मदद करता है। संगठन का उद्देश्य '**सर्वे भवतु सुखिन: सर्वे संतु निरामया**' है। यह तभी संभव है जब समाज के प्रत्येक परिवार के सभी सदस्य,बच्चे, बच्चियाँ शिक्षित,संस्कारित और स्वाभिमानी बनें।

इसी के अंतर्गत प्रतिभा विकास केन्द्र में प्रति माह मे एक दिन परिवार मिलन का आयोजन किया जाता है जिसमें केन्द्र के छात्र–छात्रा अपने माता पिता के साथ सम्मिलित होते है। केन्द्र का आचार्या–आचार्य अपनी समिति के सदस्य जैसे संयोजक संरक्षक, मार्गदर्शक एंवम अभिभावक प्रतिनिधि को भी आमंत्रित करते है। सभी अपने–अपने विचारो को विद्यार्थियों को बताते है जिससे उनके जीवन मे अनुशासन संस्कार, शिक्षा के महत्व का प्रचार हो। परिवार मिलन के अवसर पर आधा धंटा बच्चो के साथ परिवार के सभी सदस्य भी मंत्रो का उच्चारण करते है, प्राणायाम आसन भी करवाया जाता है। साथ ही प्रत्येक गतिविधि जो केन्द्र मे होती है उसकी जानकारी अभिभावको को निरीक्षक के द्वारा दी जाती है। शेष आधे घंटे मे बच्चों की दिनचर्या पर चर्चा की जाती है। प्रत्येक अभिभावक को परिवार के वातावरण को विधार्थियो के अनुकूल करने के लिए क्या करना चाहिए व क्या नही करना चाहिए इस पर चर्चा की जाती है।

इस प्रकार बच्चो को आगे बढाने में उनके परिवार की भूमिका और **प्रतिभा विकास केन्द्र** के आचार्य की भूमिका,दोनो मिलकर बच्चो को सफलता के शिखर पर ले जा सकते है। परिवार के सदस्य मिलकर यह भी समझ पाते हैंकि **प्रतिभा विकास केन्द्र** किस प्रकार से हमारे बच्चों के विकास के लिए अग्रसर है। उनकी अपने बच्चो के प्रति आगे बढाने की लालसा और बढ जाती है।

कविता

भरा पूरा परिवार हो, आपस मे सबका प्यार हो।
माँ–पिता का सिर पर हाथ हो, परिवार मे सबका साथ हो।
हर दिन खुशियो वाली बात हो, हर रात दिवाली वाली रात हो।
भाई–बहन का साथ हो, प्यार की बरसात हो।
परिवार सदा खुश रहे, ऊपर वाले का आर्शीवाद हो।

X

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2024

डा0 रुकमणी गुप्ता
संगठन मंत्री
केन्द्रीय महिला समिति

इस वर्ष दशम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून शुक्रवार को आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, उत्तम, वैयक्तिक स्वास्थ्य का संदेश देता हुए विश्व के लगभग 200 देशों में एक उत्सव के रूप में मनाया गया। जब हम बाहरी संसार से दूर आज्ञा चक्र सहस्त्रार अथवा किसी भी चक्र में ध्यान का अभ्यास करते हैं, तब व्यष्टि जीव (प्राण) का समष्टि (ईश्वर) से संबंध जुड़ता है, अर्थात अंतःकरण में निहित व्यक्तिगत चेतना का परम चेतना से मिलाप होता है यह योग का आध्यात्मिक पक्ष हैं।

इस 10 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम 'स्वयं और समाज के लिए योग' रखी गई। इस थीम में ही योग का सामाजिक एवं वेयैयक्तिक संदेश छिपा है इस योग की विधा के द्वारा मानों देश, काल धर्म, भाषा सब बेड़ियों को तोड़कर समस्त विश्व एक सूत्र में बंध गया अर्थात् भारत राष्ट्र की योग विधा को विश्व के समस्त समाजों ने अपनाया। व्यक्तिगत रूप से तो मंत्रोच्चार, आसन, प्राणायाम, ध्यान के द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक सुधार होता है। जब हम योग के द्वारा रोग रहित, स्वस्थ जीवन जीते हैं तो हमारा दवाइयों पर भी कोई खर्च नहीं होता अर्थात आर्थिक रूप से समृद्ध करने में भी योग की महती भूमिका है। राष्ट्रीय, वैश्विक स्तर पर दवाइयों पर खर्च के नित नये आंकड़े समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि योग के इस सर्वविध कल्याणकारी प्रभाव के कारण ही विश्व ने शांतिपूर्ण समरस एवं वैश्विक बंधुत्व को स्वीकार किया। कारोना काल में हमने विश्व में साक्षात रूप से सनातन धर्म तथा योग की स्वीकार्यता अनुभव की। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने योग को वैश्विक पहचान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस वर्ष सबका कल्याण करने वाली योग यात्रा का मुख्य समारोह श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में श्रीनगर में संपन्न हुआ वहां के मुस्लिम समाज के युवा बेटे–बेटियों से लेकर वृद्ध जनों ने पूर्ण उत्साह से भाग लेकर नया कीर्तिमान बनाया। पिछले 10 वर्षों में योग के देश से लेकर वैश्विक स्तर पर नये–नये कीर्तिमान बनते रहे हैं इस बार आयुष मंत्रालय ने इसरो के साथ मिलकर 'स्पेस के लिए योग' नामक विशेष आयोजन किया। जिसमें इसरो के वैज्ञानिक और अधिकारियों ने कॉमन योग प्रोटोकॉल के अनुरूप एक साथ योग अभ्यास किया।

अपने देश में भी अब शहर से दूर–दराज के गांवों तक योग से अनुशासित तथा निरोगी जीवन जीने की कला (Life Style) की झलक देखने को मिल रही है। इसी योग को दिव्यांग जनों के प्रति भी

उपलब्ध कराने में प्रयास के केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रताप राव जाधव ने दृष्टिबाधित (Blind)लोगों के लिए योग को आसानी से सीखने व अभ्यास के लिए 'ब्रेल लिपि' में 'सामान्य योग प्रोटोकॉल' पुस्तक का लोकार्पण किया। इसी प्रकार बच्चों के लिए 'प्रफेसर आयुष्मान' नामक कॉमिक बुक को भी लॉन्च किया जो बच्चों को रुचि व मनोरंजन के साथ अच्छे स्वास्थ्य के लिए योग सिखाने का अभ्यास करने में सहायक होगी।

योग की शिक्षा के क्षेत्र में इस महत्वपूर्ण योगदान के साथ ही देश के वरिष्ठ खिलाड़ियों द्वारा बहुत समय से योग को ओलंपिक खेलों में मान्यता दिलाने का प्रयास चल रहा है। प्रसन्नता की बात है कि हाल में ही भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पी.टी उषा जी ने बताया कि एशियन ओलंपिक काउंसिल (ओ.सी.ए) के कार्यकारी बोर्ड में योग को एशियन गेम्स में शामिल करने पर अपनी सहमति दी है। ओ.सी.ए की आम सभा में स्वीकृति मिलने पर योग को खेलों में स्थान मिल जाएगा। जिसका भारत हकदार है।

<u>प्रतिभा विकास केन्द्रों में योग</u> :– योग के विभिन्न अंगों आसन, प्राणायाम, मंत्रोच्चारण के साथ ध्यान के अभ्यास को संगठन द्वारा संचालित प्रतिभा विकास केदों की कक्षा में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। गांव–शहर के वंचित पिछड़े समाज के सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले इन बच्चों को जब योग का अभ्यास कराया गया तो उन बच्चों की अतीव प्रतिभा हमें देखने को मिली। इन बच्चों ने शुद्ध संस्कृत में मंत्रोंच्चारण तथा कठिन से कठिन आसनों की संगठन के विभिन्न कार्यक्रमों में मंच पर अभूतपूर्व सराहनीय प्रस्तुति दी है। सच में, ये बच्चे साधुवाद के पात्र हैं ! मुझे विश्वास है कि ये बच्चे भविष्य में अपना तथा देश का नाम रोशन करेंगे।

21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को आचार्यों के परिश्रम तथा केद्रों के स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के सहयोग से व्यक्तिगत रूप से तथा उत्तरी विभाग के कुछ केद्रो ने एक साथ मिलकर पार्क में 'योग दिवस' मनाया। इनके उत्साहपूर्ण योगभ्यास को देखकर पार्क में दैनिक घूमने जाने वाले जन भी आकर्षित हुए बिना नहीं रह सके। कुछ लोगों ने इन बच्चों तथा आचार्य से प्रतिभा विकास केंद्र तथा संगठन के बारे में जानकारी भी ली। इस प्रकार वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन देश की अंतिम सीमा पर बसने वाले ग्रामीण अंचलों में भी विद्यालयों के माध्यम से 'योग शिक्षण द्वारा स्वस्थ जीवन' के नए आयाम प्रस्तुत करने के प्रयास में लगा है

अंत में, मुझे विश्वास है कि मुनियों द्वारा प्रदत्त यह योग परंपरा तीव्र गति से चारों ओर विस्तार लेते हुए व्यक्ति से समाज, समाज से देश की सीमाओं को पार करती हुई पूरे विश्व में अविरल रूप से आगे बढ़ती गई कोरोना जैसे अन्य वैश्विक रोगों को भी निरस्त करती रहेगी। योग की इस यात्रा में उत्तम स्वास्थ्य, मानसिक शांति सामाजिक जुड़ाव के द्वारा संपूर्ण मानवता के कल्याण की भावना ही निहित है।

x

बर्फीली पहाड़ियों से चीन बॉर्डर तक योग दिवस का जोश

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस से जुड़े कार्यक्रमों में लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कश्मीर में योग किया। उधर चीन बॉर्डर के पास पैंगोंग झील पर जवानों ने योग से जुड़े कार्यक्रम में हिस्सा लिया। पेश है अंतरराष्ट्रीय योग दिवस से जुड़ी ऐसी ही कुछ झलकियां :

चीन बॉर्डर के पास पैंगोग झील के किनारे सेना के जवानों ने योग किया Photo: PTI

तमिलनाडु के कोयंबटूर में ईशा योग केंद्र में स्थित आदियोगी में CRPF जवानों ने योग किया।

उत्तराखंड के CM पुष्कर सिंह धामी ने पिथौरागढ़ में किया योग

चमोली में बदरीनाथ मंदि... सामने ITBP ने किया

आर्ट ऑफ लिविंग ने भोपाल सेंट्रल जेल में कैदियों के साथ मनाया योग दिवस

हरिद्वार में योगऋषि स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण ने योग दि...

क्या कोई दोबारा जीना चाहता है अपने जीवन के कुछ क्षणों को........

निरीक्षिका – शापेन्द्र शारदा साठे
जिला– बसंत व लाजपत नगर

जब मैं छोटी थी हर शाम हमारे घर पर कोई ना कोई मेहमान अवश्य आते थे। मतलब, सिर्फ हमारे घर पर नहीं, लगभग सभी लोग एक दूसरे के साथ समय निकालकर मिलकर जरूर बैठना पसंद करते थे। अपने जीवन की खुशियां और परेशानियां साझा करते थे, देश दुनिया की बातों पर चर्चा करते थे। समाज साफ था, हवा और पानी भी। लगभग सभी आंगन में चहल–पहल दिखती थी, वैसे संयुक्त घरों में लोग ही इतने होते थे कि वे ही जब बाहर बैठते थे तो लगता था जैसे कोई अतिथि आए हैं। लोगों के आंगन एक दूसरे के आंगन से जुड़े होते थे, सुविधा के लिए छोटी दीवार या छोटे बाड़ लगाए जाते थे। किसी एक के घर आंगन में आसपास की महिलाएं गप्पे मारती थीं, फुर्सत के समय में, अपने अनुभव और अपने हुनर दोनों साझा करती थीं। उस समय हमें सिलाई–कढ़ाई सीखने के लिए किसी स्कूल में जाने की जरूरत नहीं पड़ती थी।

उस समय 10 किलो–20 किलो बड़ी पापड़, अचार बनाना कोई बहुत मेहनत का काम नहीं था। सुंदर–सुंदर स्वेटर शॉल या बड़ी–बड़ी कढ़ाई वाली चादर, थालपोश यह बनाना भी कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी। ठंडियों में आंगन में अचार–बड़ियां–पापड़ आराम से देखे जा सकते थे। उस समय सिलाई कढ़ाई हर बेटी को आती ही थी और हर घर आंगन में सब बैठकर हंसते मुस्कुराते पारंपरिक लोकगीत गाते हुए सुंदर कढ़ाई वाली बड़ी–बड़ी चादर बना लेते, किलो–किलो के अचार पापड़ चिप्स चकली और अगर किसी ने कोई नया पकवान सीखा तो वह सबको बताती थी और सबको सिखाती थीं। आस पड़ोस की महिलाएं भी इन सारे कामों में हाथ बटा देती थीं। काम कैसे खत्म हो जाता था पता ही नहीं चलता था।

ये सारी बातें मेरी मां ने मुझे बताई हैं, लेकिन जब हम भी गांव जाते थे तो वहां भी बहुत सारी चीज हमने देखी हैं। वहां सुबह घर के काम निपटाकर सभी नदी या तालाब में नहाने जाती थीं, और रास्ते में से खेतों की मिट्टी भी लेकर जाती थीं। बालों पर मिट्टी लगाकर वे कपड़े धोती थीं और जब कपड़े धुल जाते थे तो वे अपने बालों को भी धो लेती थीं। मिट्टी से धुले हुए बाल इतने मुलायम, सुंदर, लंबे और इतने घने होते थे कि आज का महंगे से महंगा हेयर ट्रीटमेंट भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता। आज के महंगे से महंगे पार्लर भी उस समय के बेसन–हल्दी–चोकर–आटा, इन सब से नहा कर निकलने वाली महिलाओं के सुंदरता की बराबरी नहीं कर सकता। कितना ग्लो करती थीं हमारी चाची, नानी, दादी, आज वह ग्लो नजर नहीं आता। और हां, गांव में हम बच्चे गर्मियों में जाते थे अक्सर वहां किसी भी फल के पेड़ों पर किसी का आधिपत्य नहीं था। हमने वहां जितने फल खाए हैं शायद आज के समय में हम नहीं खाते हैं। पेड़ों पर बैठकर आम खाना, जामुन के पेड़ के नीचे जामुन, अमरूद के पेड़ के उपर बैठकर अमरूद और भी न जाने कितनी सारे फल मुझे तो उनके नाम भी नहीं मालूम, लेकिन कभी किसी ने नहीं रोका, बल्कि उन्होंने हमें अपने खेतों के फल दिए ही हैं। आज वैसे लोग नहीं हैं, या फिर नजर नहीं आते समाज में।

गांव में कोई भी बहुत अमीर लोग नहीं थे, लेकिन फिर भी पैसों की कमी से किसी बेटी की शादी टूटते नहीं देखी। सारा गांव मिलकर बड़ी धूमधाम से ब्याह करवाता था। तब ब्याह वाले घर में हफ्तों पहले से चहल–पहल होती थी। लोग बेटी को आशीर्वाद के साथ–साथ अनाज, दालें और सब्जियां भी ब्याह वाले घर में देते थे ताकि उस घर वाले का आर्थिक भार कम किया जा सके, और सभी मिलकर भोजन भी बनाते थे, ताकि ब्याह वाले घर में ज्यादा काम ना पड़े ....और गांव के लड़के!... वे तो बढ़

चढ़कर व्यवस्था में भाग लेते थे। सारा काम दौड़–दौड़ कर करते थे। उनके लिए उनकी दीदी–भैया–बुआ काका की शादी होती थी। बारातियों का खूब आदर सत्कार होता था। सभी बारातियों का सभी गांव वालों से परिचय होता था। सारा गांव बेटी की विदाई में आंसू बहाता और रोते हुए बेटी को भर–भर आशीर्वाद और शगुन देकर डोली की विदाई होती थी।

फिर समय बदला और धीरे–धीरे लोगों को गांव में कमियां दिखने लगी या कहें, कि दिखाई गईं। लोग अपने पुश्तैनी कारोबार छोड़कर और खेती–बाड़ी छोड़कर नौकरी की तलाश में शहर आ गए। खेती करने, तेल निकालने, कपड़ा बनाने, लोहा पीटने, घड़ा बनाने, साबुन बनाने, टोकरी बनाने, गहने बनाने, कपड़ों की सिलाई करने इन सब चीजों में जितनी पढ़ाई की जरूरत थी उतना तो वो लोग पढ़े लिखे होते थे.... यह सब बनाने में किसी डिग्री की जरूरत तो नहीं थी ना, फिर क्यों गांव का युवक पढ़ाई करने गांव से शहर आ गया भला। जब शुरू में वह गांव वापस जाता था तो सबसे मिलकर एक नई असीम ऊर्जा पता था और वह शहर में खुद को कभी अनफिट नहीं पता था, क्योंकि नगर और गांव की जीवन शैली बहुत ज्यादा अलग नहीं थी।

बाद में शहर तो बहुत जल्दी परिवर्तन या कहीं की साजिश का शिकार हो गया। लेकिन गांव ने एक लंबे समय तक खुद को बचा कर रखा। वहीं शहर ने संयुक्त परिवार की परंपरा को खो दिया.... कारण कई हो सकते हैं पर मेरा मानना है कि सिनेमा ही एक बहुत बड़ा कारण है। आज से 20 से 30 साल पहले छोटे शहरों में मानवता, रिश्ते, संस्कार और परंपरा जीवित थे, लेकिन समय का चक्र इतनी तेजी से घूमा कि अब गांव और शहर के बीच जो मर्यादा–परंपरा की महीन रेखा थी अब मिटने लगी है। अब गांव भी महानगर हो गए हैं वहां भी अब मिट्टी की खुशबू नहीं आती। कहीं से चाची, मामी , दादी, नानी के लोकगीतों की लहरियां सुनाई नहीं पड़ती। अचार, पापड़, बड़ी, सेवइयां बनाती महिलाओं का समूह किसी आंगन में नही दिखता है। और ना किसी की रसोई से बनती किसी सब्जी की खुशबू आती है ना किसी विवाह वाले घर में वह रौनक रही, ना वह दौड़ते भागते लड़के रहे ना, ब्याह के गीत गाती वे महिलाएं, ना दूल्हा–दुल्हन के वह गांव भर के रिश्तेदार रहे। अब तो ऊंची ऊंची दीवारें हैं उन गांव में भी, जहां से एक दूसरे का आंगन तक नहीं दिखता और दूसरे की खिड़कियों की ओर मुंह किया तो देखा AC के गर्म हवा फेंकने वाला वह बड़ा सा पंखा। अब लोग छतों में नहीं सोते, पता नहीं कैसे नींद आती होगी उन्हें बंद कमरों में। उन बंद कमरों के अंदर सच में कोई नहीं सुन पाता किसी की सिसकियां, किसी का रोना, किसी का दुख, किसी का दर्द!

अब लोग पढ़ लिख गए हैं, सब सुविधा है गांव में, लेकिन रिश्ते पहले जैसे नहीं रहे, खुशियां नहीं रही। पानी चाहे आंखों का हो या धरती का, बहुत नीचे चला गया है। मैंने देखा है बिन चलाए पानी फेंकने वाला नलकूप, बड़े–बड़े जगह से जमीन से निकलता हुआ पानी का झरना। वह मैंने देखे हैं, आजकल के बच्चों ने कभी देखे होंगे??? नहीं, उनका बचपन तो बकासुर रूपी मोबाइल खाए जा रही है।

जब पैसा कम था परन्तु कोई भूख और ठंड से नहीं मरता था। आज पैसे से सब कुछ मिलता है पर खुशी नहीं मिलती, रिश्ते नहीं मिलते, पवित्रता नहीं मिलती, परंपरा और संस्कार नहीं मिलते। पुरातन समय में राक्षस जंगल में रहते थे, आज हमारे आपके बीच रहते हैं हमारी जेब में रहते हैं। आज शिक्षा का प्रतिशत बढ़ा है साथ में अपराध भी बढ़ा है। आज बड़ी–बड़ी फैक्ट्रियां आ गई हैं लेकिन नौकरी और व्यापार खत्म हो गए। तकनीक में वृद्धि हुई है, लेकिन बीमारियां बढ़ गई है और अपराध के तरीके भी। हवा गंदी हो गई, धरती–आसमान गंदे हो गए, पानी गंदा हो गया और लोगों की मानसिकता भी। **भारतीय संस्कृति और सभ्यता अनमोल है, इसकी बराबरी दुनिया की कोई सभ्यता नही कर सकती। हमारा ध्येय इसी परंपरा को बचाकर रखना, सहेजना और पुष्पित पल्लवित करना होना चाहिए।**

मुझे तो वही पहले वाला समय पसंद और आपको ?

महिला सशक्तिकरण

निरीक्षिका – महक कश्यप
विभाग – यमुना विहार

विश्व स्तर पर अपनी संस्कृति और विरासत के लिए प्रसिद्ध भारत विविध संस्कृतियों से भरा हुआ है। लेकिन भारतीय समाज हमेशा से एक पुरुष प्रधान देश रहा है यही वजह है कि महिलाओं को शिक्षा और समानता के बुनियादी मानवाधिकारी से लगातार वंचित रखा गया है। लैंगिक समानता की धारणा पुरूशों और महिलाओं के बीच समानता की मांग करती है लेकिन महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित रखा गया है। भारत जैसे देश के लिए इसके विकास और विकास में महिला सशक्तिकरण की बड़ी भूमिका होगी।

जैसा कि हम सभी जानते है, किसी भी समाज को सभ्य समाज का दर्जा तब तक नहीं प्राप्त होता जब तक उस समाज में नारी को अधिकार न हो। हर युग में भारत में ऐसे संतो का अवतरण हुआ, जिन्होनें प्रखरता के साथ नारी सशक्तिकरण की बात कही।

नारी सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका :– शिक्षा नारी सशक्तिकरण का सबसे बड़ा साधन है और एक ऐसा कारक भी है जो देश के समग्र विकास में मदद करता है। शिक्षा महिलाओं के जीवन में बदलाव ला सकती है। जैसा कि किसी महान, व्यक्ति ने कहा है। यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते है, तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते है, लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते है तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते है''

शिक्षा महिलाओं को आत्मविश्वास, सम्मान, वित्तीय सहायता प्रदान करने की क्षमता हासिल करने में मदद करती है। सही, समर्थन मिलने पर महिलाओं ने हर क्षेत्र में शानदार प्रदर्शन किया है भारत में भी, हमने महिलाओं को विविध भूमिकाओ को, सभालते देखा है। चाहे वह एक प्रधानमंत्री, अंतरिक्ष यात्री, उधमी, बैंकर और बहुत कुछ हो। साथ ही महिलाओं को परिवार की रीढ़ की हड्डी भी माना जाता है। घरेलू कामों से लेकर बच्चो के पालन–पोषण तक, वे कई जिम्मेदारियों को संभालते है. यही कारण है कि वे Multitasking में महान हैं, अक्सर कई कामो मे महिलाओं पेशेवर और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों के बीच कुशलता से काम करती है जबकि शहरी शहरों में कामकाजी महिलाएं है, ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी उन्हें घर के कामों तक ही सीमित रखा है। हम एक ऐसे राष्ट्र के रूप में समृद्ध होने की आकांक्षा कैसे कर सकते है। जहां हर लड़की की शिक्षा तक पहुंचे नही नहीं है, या अपनी पसंद से खुद नही कुछ भी करने में असमर्थ है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ हम देवी–देवताओं की पूजा करते है जबकि हम लैगिक समानता के बारे में सोचने की इच्छा नहीं उठाते।

परंतु अब मानव की दृश्टि में कुछ बदलाव आ रहा है। आज के समय में नारी शक्ति किसी परिचय का मोहताज नही है प्राचीन काल से ही नारियों की समान में अच्छी एवं महत्वपूर्ण भूमिका है, नारी की उचित सम्मान प्राप्त होता है, हमारा देश **''यत्र नार्यस्तु पूज्यते तत्र रमंते देवता वाला''** देश है।

इसलिए, हमारी सभी माताओं, बहनों और बेटियों के लिए हमे अखंडता का वातावरण बनाने का लक्ष्य रखना चाहिए। हमें जीवन के हर चरण में अपने निर्णय लेने के लिए उन्हें सक्षम बनाने के लिए उनके आत्मविश्वास का बढ़ाना चाहिए और इसी तरह हमें महिला सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने मे सहयोग करना चाहिए।

''जब होगा नारी का सम्मान''
''तभी बनेगा हम मेरा भारत महान''

X

पूर्वी संभाग मासिक आचार्य समीक्षा वर्ग

प्रतिभा विकास केन्द्र को सुचारू और सुव्यवस्थित रुप से संचालित करने के लिए वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा विभिन्न कार्य किये जाते हैं, जिसमें एक प्रमुख कार्यक्रम ''मासिक आचार्य समीक्षा'' बैठक है। यह एक कार्यक्रम है जिसमें आचार्यों के कार्यों की प्रत्येक महीने समीक्षा होती है। तथा उनके द्वारा अगले महीने की पाठ्यक्रम की योजना विशेषता देनी होती है। इसके अलावा बच्चों की संख्या, नए नामांकन की संख्या तथा कुछ बच्चों द्वारा केंद्र छोड़ने के कारणों की समीक्षा होती है। इस बार की समीक्षा बैठक का संभागसह आयोजित किया गया। जिसमें पहली बार मुझे भी कार्यक्रम के कालांश की योजना बनानी थी। यह एक अलग प्रकार का अनुभव था। चिंता के साथ उत्सुकता भी थी और खुशी भी क्योंकि पहली बार व्यवस्था करनी थी। व्यवस्था भी करनी एक चुनौती है क्योंकि बिना पैसे दिए कार्यक्रम स्थल की व्यवस्था करना कठिन होता है, लेकिन रामजी का कार्य हमेशा सफल ही होता है। मुझे श्रीमान दीपक अग्रवाल जी, जो हमारे पूर्वी विभाग के अध्यक्ष हैं उनका फोन आया। वह भी किसी दूसरे विषय में बातें थी, मैंने उनके सामने ये अपनी समस्या रखी। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि वह स्वयं वर्ग की सारी व्यवस्थाएं करेंगे जिसमें स्थान भी होगा तथा आचार्याओं के लिए जलपान, भोजन की व्यवस्था भी। न्यू अशोक नगर स्थित महाराजा अग्रसेन धर्मशाला में वर्ग की व्यवस्था की गई, स्थल बहुत ही सुंदर था जिसमें पंखे और बैठने के लिए कुर्सियां भी लगी थी। समय पर जलपान एवं भोजन की भी व्यवस्था हुई। यह मेरे लिए बहुत ही सुखद अनुभूति थी क्योंकि इससे पहले मैं जहां भी गया वहां स्थान के लिए भाड़े के रूप में पैसे मांगे गए थे इसकी विपरीत सारी सुविधाएं मुक्त में मिली।

कार्यक्रम को मैंने छः कालांश में विभाजित किया। रजिस्ट्रेशन वंदना कर्म योग एवं प्राणायाम समीक्षा पाठ्यक्रम एवं चर्चा सभी कलशः समय पर पूर्ण हुए। मेरे साथ यमुना विहार की निरीक्षिका सुश्री महक जी का सहयोग मिला जिसमें कार्यक्रम करने में सुविधा हुई। पूर्वी संभाग के अंतर्गत यमुना विहार विभाग, पूर्वी विभाग, नोएडा विभाग व गाजियाबाद विभाग सम्मिलित है। इन विभागों में कुल 20 आचार्य अपेक्षित थे परंतु चार आचार्यों को व्यक्तिगत समस्या थी तो केवल 16 आचार्य सम्मिलित हो पाई। कुल मिलाकर समीक्षा बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

भरत सिंह
पूर्वी संभाग निरीक्षक

उत्तरी संभाग–मासिक आचार्य समीक्षा वर्ग

30 जून, 2024 प्रतिभा विकास केन्द्र उत्तरी संभाग (उत्तरी, पश्चिमी, मध्य विभाग) की स्वतंत्र समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई जिसमें श्री दिग्विजय गुप्ता जी, केन्द्रीय महामंत्री, श्री विष्णु अग्रवाल जी, महामंत्री, उत्तरी विभाग, केन्द्रीय उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चावला जी, श्री सुरेश जी, अध्यक्ष, श्री प्रदीप गर्ग जी, अध्यक्ष, कपिल विहार मंदिर समिति उपस्थित रहे। इनमें उत्तरी संभाग के 24 केन्द्रों से 23 आचार्या उपस्थित रहीं। इस बार समीक्षा बैठक की शुरूआत श्रीमती प्रियंका बंसत (आचार्या गायत्री प्रतिभा विकास केन्द्र) के योग से हुई इसमें वीरभद्रासन, वृक्षासन, पद्मासन, पश्चिमोत्तानासन, सर्वागासन, हलासन, चक्रासन, अर्धकटिचक्रासन के लाभ बताने के साथ श्रीमती दिव्या जी, निरिक्षिका ने केन्द्रों में होने वाले प्राणायामों का अभ्यास करवाया।

प्रथम सत्र में श्रीमती अल्पना ठाकुर, (उज्जवल भविष्य प्रतिभा विकास केन्द्र) के द्वारा संस्कार पक्ष का अभ्यास करवाया गया।

अतिथियों एवम् सभी आचार्यों के साथ भारत माता, श्रीराम हनुमान जी के चित्रों के आगे दीप प्रज्जवलन मंत्रों के साथ किया गया।

द्वितीय सत्र :– विषय 'परिवार मिलन में आचार्यों का योगदान' में आचार्यों का श्री दिग्विजय जी ने मार्गदर्शन किया। इनके द्वारा अधिक से अधिक परिवार से संपर्क करने का आग्रह किया गया। श्रीमान विष्णु जी ने हर सम्भव सहायता, केन्द्र की सामग्री उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। सभी सत्रों में आचार्यों के द्वारा उठाई गई अधिक से अधिक जिज्ञासा का समाधान किया गया।

तृतीय सत्र :– में समीक्षा पत्रक पर चर्चा हुई, केन्द्रों पर मनाए गये कार्यक्रम उत्सवों की जानकारी के साथ बच्चों व उनके अभिभावकों की उपस्थिति की संख्यात्मक जानकारी ली गई।

चतुर्थ सत्र में पाठ्यक्रम पर आचार्यों से चर्चा की गई। केन्द्रों पर विद्यार्थीयों की प्रतिभा को बढ़ाने के लिए और क्या–क्या प्रयास किए जा सकते है इसकी चच्रा हुई।

पंचम समापन सत्र में श्रीमान दिग्विजय गुप्ता जी ने अपना–अपना कार्य निष्ठा से करने का आग्रह किया, और उन्होंने अपने जीवन के योग, संस्कार विषयों पर अपने सकारात्मक अनुभव साझा किये।

अंत में कल्याण मंत्र के उच्चारण के साथ यह प्रथम संभागशः समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई।

श्रीमती दिव्या
निरीक्षिका–उत्तरी विभाग

दक्षिणी संभाग मासिक आचार्य समीक्षा वर्ग

दक्षिणी संभाग में 34 प्रतिभा विकास केन्द्र चल रहे है। सभी केन्द्रों के आचार्यों का मासिक समीक्षा वर्ग रहता है जिसमें संस्कार पक्ष—ओम, गायत्री मंत्र, महामृत्यंजय मंत्र, सरस्वती वंदना, भारत वंदना, योग—प्राणायाम आदि का स्वर और अर्थ सहित बताया समझाया जाता है, जिससे आचार्य द्वारा अपने केन्द्रों पर अपने विद्याथियों को और समाज के लोगों को भी अच्छे से अभ्यास कराया जा सके। इस समीक्षा बैठक में केन्द्रीय टोली सदस्य श्रीमान श्रीराम अग्रवाल जी,फरीदाबाद विभाग के अध्यक्ष, श्री सुखवीर जी, श्री भगवान दास जी, उद्योगपति फरीदाबाद भी बैठक में रहे, और भी बहुत से वरिष्ठ कार्यकर्ता का इस समीक्षा बैठक में उपस्थिति रही। श्री सतीश जी (बल्लभगढ़) ने सभी आचार्यां के बैठने से लेकर जलपान—पान, भोजन की व्यवस्था की।

यह बैठक 10:30 बजे से 01:30 बजे तक तीन सत्रों में चली।

1. योग, प्राणायाम, संस्कार पक्ष
2. परिवार मिलन आगामी कार्यक्रम की योजना
3. समीक्षा और पाठ्यक्रम। श्रीराम अग्रवाल जी ने अपने मार्गदर्शन में कहा यह कार्य ईश्वरीय काम है जो आप सभी आचार्यों को मिला है। प्रतिभा विकास केन्द्रों में बच्चों के जीवन में पढ़ाई के साथ—साथ संस्कार भी दे रहे है। श्री सुखवीर जी ने बताया कि बच्चों को कहानियों के माध्यम से कोई भी पाठ को जोड़कर पढ़ाने से बच्चों को अच्छी तरह समझ आएगा, ऐसा सभी आचार्य कर सकते है। रतन जी ने बताया सिखाते—सिखाते हमें सीखना भी है। कुछ हम सिखाएंगे तो हमे सिखने के लिए भी बहुत कुछ मिलता है। श्री भगवान दास जी ने आशीर्वचन में कहा आप जो कार्य कर रहे है देश के लिए बहुत बड़ा कार्य कर रहे है। अंत मे भोजन करके और कल्याण मंत्र करके बैठक समाप्त हुई।

रतन कुमार
निरीक्षक—फरीदाबाद व गुरुग्राम विभाग

योग दिवस

विद्यार्थी का नाम – अनुष्का
जिला–कंझावला
जीजाबाई प्रतिभा विकास केन्द्र

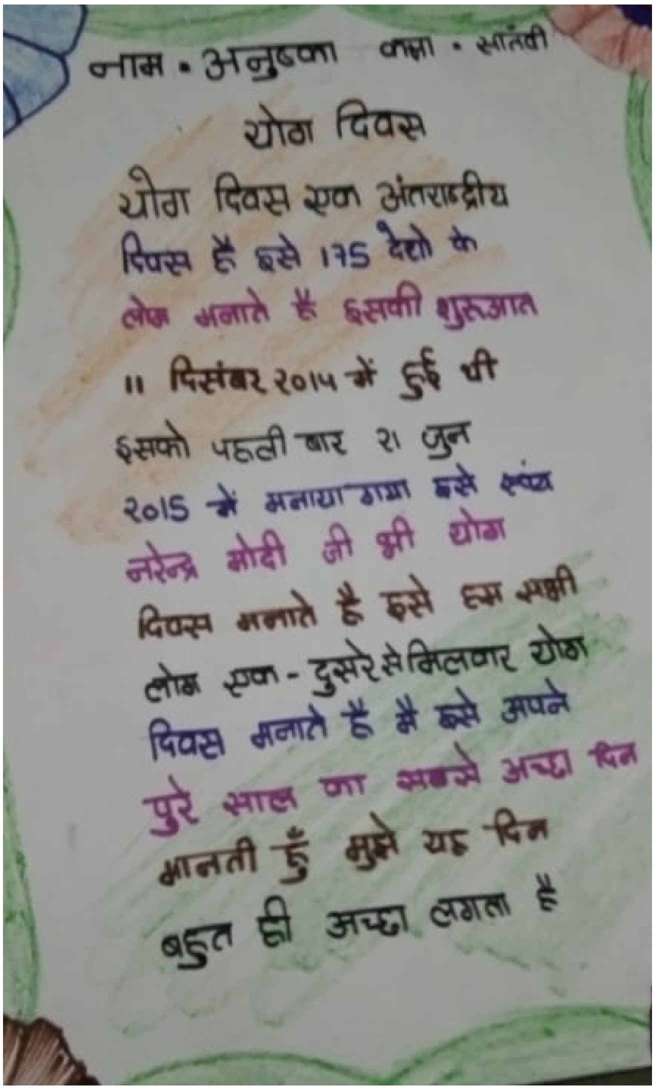

X

विद्यार्थी का नाम – मान्यता साठे
जिला–कंझावला
भगत सिंह प्रतिभा विकास केन्द्र

मेरा नाम मानता है और मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। और मैं भगत सिंह पर जो विकास केंद्र में पढ़ती हूं हमारी दीदी जी का नाम श्रीमती कुसुम जी है और हमारे केंद्र की निरीक्षिका जी का नाम श्रीमती दिव्या जी है। मेरा अनुभव योग दिवस के प्रति या है कि योग दिवस तो एक बहाना है। उन लोगों के योग करने का जो लोग हमने दैनिक जीवन में व्यस्त रहते हैं और अधिक परेशान होने पर कुछ भी बाहर का तला हुआ अस्वस्थ खाना खा लेते हैं जैसे समोसा पकौड़े मोमोस चाउमिन। इतिहास साक्षी है ऐसे लोग योग दिवस के दिन योग करके स्वस्थ बल वर्धन वाली चीजे खाए और अपना पूरा दिन स्वस्थ बेहतरीन करें, हम योग दिवस इसलिए मानते हैं। क्योंकि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2015 में आरंभ होने के बाद हर साल 21 जून को मनाया जाता है। ये भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ही थे जिन्होंने सबसे पहले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाने का विचार दिया था। 21 जून उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे बड़ा दिन है। मेरी माता जी का योग के प्रति यह कहना है कि हमें योग करना चाहिए हम योग करके तो स्वस्थ रहेंगे हमें योग हमेशा करना चाहिए हमारी हड्डियां और जोड़ों को मजबूत करता है। हमें हाथ और पांव में दर्द नहीं होता है

धन्यवाद

X

संगठन की गतिविधियाँ

Delhi, Delhi, India
Mubarakpur Dabas, Block B, Meer Vihar, Mubarakpur Dabas, D

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन

द्वारा संचालित - प्रतिभा विकास केन्द्र

हमारा कार्यक्षेत्र

- ★ दिल्ली
- ★ हरियाणा
- ★ उत्तर प्रदेश
- ★ बिहार
- ★ झारखण्ड
- ★ असम
- ★ बंगाल
- ★ ओड़िसा
- ★ राजस्थान
- ★ मध्य प्रदेश
- ★ तमिलनाडु